thearyasamaj.org

ओ३म्
आर्य जगत्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

रविवार, 25 जनवरी 2015 | आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा का साप्ताहिक पत्र | सप्ताह रविवार 25 जनवरी 2015 से 31 जनवरी 2015

मा.शु. 06 ● वि० सं०–2071 ● वर्ष 79, अंक 141, प्रत्येक मगंलवार को प्रकाश्य, दयानन्दाब्द 191 ● सृष्टि–संवत् 1,96,08,53,115 ● इस अंक का मूल्य – 2.00 रुपये

इटावा (कोटा) में संगीतमय वेदकथा एवं राष्ट्र समृद्धि महायज्ञ संपन्न

महर्षि दयानन्द वेद प्रचार समिति आर्य समाज कोटा द्वारा ग्रामीण क्षेत्र में वेद प्रचार कार्यक्रम के तहत कोटा जिले के इटावा कस्बे में दो दिवसीय संगीतमय वेदकथा (वैदिक प्रवचन) तथा ग्यारह कुण्डीय राष्ट्र समृद्धि महायज्ञ का आयोजन किया गया।

इस दो दिवसीय संगीतमय वेदकथा में वैदिक प्रवाचक आचार्य अग्निमित्र शास्त्री द्वारा अपने प्रवचन में वेद, ईश्वर, जीत, प्रकृति, यज्ञ, धर्म तथा आध्यात्म संबंधी वैदिक सिद्धान्तों की सरलतम रीति से जानकारी दी तथा वेदानुकूल धर्ममार्ग पर चलने का आव्हान किया।

वेदकथा में अलीगढ़ (उ.प्र.) से पधारे आर्य समाज के ख्याति प्राप्त भजनोपदेश पं. भूपेन्द्र सिंह आर्य एवं लेखराज शर्मा ने अपने सुमधुर भजनों एवं गीत के माध्यम से आर्य समाज एवं महर्षि दयानन्द के सिद्धान्तों तथा कार्यों से अवगत कराया।

कार्यक्रम में जिला आर्य सभा कोटा के प्रधान अर्जुनदेव चड्ढा ने कहा कि गांवों में वेद का प्रचार अत्यन्त जरूरी है। समाज में व्याप्त अंधकार वैदिक सिद्धान्तों के ज्ञान से ही दूर होगा।

इस अवसर पर आर्य समाज द्वारा वैदिक साहित्य की स्टॉल लगाई गई जिसमें लोगों ने बड़ी संख्या में सत्यार्थ प्रकाश एवं वैदिक साहित्य खरीदा। कथा पाण्डाल में पर्यावरण संरक्षण, जल बचाओ, भूमि बचाओ, यज्ञ, खानपान तथा ऋषि के जीवन की जानकारी देने वाले चित्र, बैनर तथा पोस्टर लगाये गये थे। प्रांगण में ओ३म् के ध्वज आकर्षण का केन्द्र थे।

इटावा के श्री नरेन्द्र नागर, राजेन्द्र गौड़ एवं सुनील सोनी को सत्यार्थ प्रकाश भेंट देकर तथा दुपट्टा ओढ़ाकर सम्मानित किया गया।

वेदकथा के अंत में समिति के संगठन मंत्री ऐडवोकेट चंद्रमोहन कुशवाह ने विद्वानों, पदाधिकारियों, कार्यकर्ताओं तथा श्रद्धालुओं का आभार व्यक्त किया।

डी.ए.वी. इंटरनैशनल, अमृतसर में लड़कियों के राष्ट्र स्तरीय डी.ए.वी. खेलों में पंजाब ज़ोन रहा प्रथम

डीएवी इंटरनैशनल स्कूल, अमृतसर में डी.ए.वी. राष्ट्रीय खेलों के अन्तर्गत लड़कियों के राष्ट्र स्तरीय मुकाबलों का आयोजन किया गया। इन मुकाबलों में देश भर के 13 जोनों के 155 डी.ए.वी. स्कूलों की लगीग 1200 लड़कियों ने 17 विभिन्न खेलों में भाग लिया।

कार्यक्रम का शुभारम्भ विद्यालय प्रागंण में भव्य समारोह के साथ हुआ। 'आर्य रत्न' माननीय श्री पूनम सूरी जी, प्रधान, डी.ए.वी. प्रबन्धकीय समिति, नई दिल्ली, इस समारोह में मुख्य अतिथि थे।

मुख्य अतिथि माननीय श्री पूनम सूरी जी ने अपने शुभ–करकमलों से विद्यालय की 'नव निर्मित इमारतों' महात्मा आनंद स्वामी आर्य ब्लॉक, रिसोर्स सैंटर, गतिविधि कक्ष एवं लेखा–जोखा कार्यालय का उद्घाटन किया। श्री पूनम सूरी जी को उत्तरदायित्व का प्रतीक 'पगड़ी', वीरता कर प्रतीक 'खड्ग' और वैदिक संस्कृति का प्रतीक 'उत्तरीय' भेंट कर सम्मानित किया गया। समारोह का शुभारम्भ दीप प्रज्जवलित करके किया गया। विद्यालय के विद्यार्थियों द्वारा डी.ए.वी. गान भी गाया गया।

श्री ले.पी शूर द्वारा सभी उपस्थित जनों का स्वागत किया गया। उन्नेंने अपने स्वागती भाषण में कहा कि खेल विद्यार्थी के शारीरिक और मानसिक विकास में महत्त्वपूर्ण निभाते है।

मुख्यातिथि श्री पूनम सूरी जी ने खेलों में भाग लेने आए विद्यार्थियों को सम्बोधित करते हुए कहा कि खेल में सबसे महत्वपूर्ण बात है खेल को खेल भावना से खेलना। एक खिलाड़ी के लिए विजेता बनने से भी अधिक जरूरी है कि वह एक अच्छा मानव बने। जिस प्रकार आग में तप कर धातु शुद्ध एवं पवित्र अनती है उसी प्रकार परिश्रम की भट्टी में जलकर खिलाड़ी विजयी बनता है। उन्होंने यह भी घोषणा की कि तीन दिन चलने वाली इन राष्ट्रीय खेलों में सर्वश्रेष्ठ खेल भावना का प्रदर्शन करने वाले खिलाड़ी को पुरस्कृत किया जाएगा।

विद्यालय के लगभग 200 छात्र छात्राओं द्वारा 'आनंद नाद' काव्य नाटक की प्रस्तुति अत्यंत मनमोहक ढंग से दी।

अन्तिम दिन एथलैटिक्स के मुकाबले करवाए गए एवं विद्यालय में समापन समारोह का आयोजन किया गया। इस समारोह में श्री कुलजिंदर सिंह मल्ली, ए.ई.ओ. खेल विभाग, अमृतसर मुख्य अतिथि थे। विद्यालय के चेयरमैन डा. वी.पी. लखनपाल ने अतिथिगणों, खिाड़ियों एवं उनके प्रशिक्षकों का स्वागत किया।

इस अवसर पर विद्यालय के छात्र छात्राओं द्वारा 'अर्थ सांग' एवं मलवई गिद्दा प्रस्तुत कर सबका मन मोह लिया। तीन दिवसीय इन खेल मुकाबलों में पंजाब जोन 132 अंकों के साथ ओवर ऑल विजेता रहा। दिली एवं एन.सी.आर. 46 अंको के साथ द्वितीय स्थान पर रहा। उत्तर प्रदेश एवं उत्तराखंड जोन 38 अंको के साथ तृतीय स्थान पर रहा।

स्वजातीय या विजातीय ईश्वर अथवा अपने आत्मा में तत्त्वान्तर वस्तुओं से रहित एक होने से वह 'अद्वैत' है। – स. प्र. समु. ९

संपादक – पूनम सूरी

ओ३म्
आर्य जगत्
सप्ताह रविवार 25 जनवरी, 2015 से 31 जनवरी, 2015

हम तेरे सम्मुख मूढ़ हैं

●डॉ. रामनाथ वेदालंकार

मूरा अमूर न वयं चिकित्वो, महित्वमग्ने त्वमङ्ग वित्से।
शये वव्रिश्चरति जिह्वयाऽदन्, रेरिह्यते युवतिं विश्पतिः सन्।।

ऋग् १०.४.४

ऋषिः **त्रितः आप्त्यः**। देवता **अग्निः**। छन्दः **त्रिष्टुप्**।

● (**अङ्ग**) हे, (**अमूर**) अमूढ़, (**चिकित्वः**) ज्ञानी, (**अग्ने**) परमेश्वर!, (**मूराः**) मूढ़, (**वयं**) हम, (**महित्वं**) महत्ता को, (**न**) नहीं [जान पाते]।, (**त्वं**) तू, (**वित्से**) जानता है। [हमारा], (**वव्रिः**) रूपवान् आत्मा, (**शये**) सोया पड़ा है, (**जिह्वया**) जिह्वा [आदि इन्द्रियों] से, (**अदन्**) भोग करता हुआ, (**चरति**) विचरता है, (**विश्पतिः सन्**) राजा होता हुआ [भी], (**युवतिं**) प्रकृति–रूप युवति को, (**रेरिह्यते**) अतिशय पुनः–पुनः चाट रहा है।

● हे अग्ने! हे तेजोमय ज्ञानी प्रभु! हम मूढ़ हैं, तुम अमूढ़ हो। हम तो यह भी नहीं जानते कि 'महत्ता' किसका नाम है, महत्त्व प्राप्त करना किसे कहते हैं। हम तो समझते हैं कि सांसारिक दृष्टि से महिमाशाली होना, हाथी, घोड़े, रथ, सेवक आदि का स्वामी हो जाना ही महत्ता है। हमारा तो विचार है कि नचिकेता को यम ने जिस सांसारिक धन–दौलत, पुत्र–पौत्र, भूमि के राज्य आदि सम्पत्ति के प्रलोभन में फँसाना चाहा था, उस सम्पत्ति को पा लेना ही महत्ता है। पर हम मूढ़ अज्ञानियों के ऊपर रहनेवाले अमूढ़ ज्ञानी तुम जानते हो कि सच्ची 'महत्ता' क्या है।

हमारा रूपवान् आत्मा सोया पड़ा है, उसे यही चेतना नहीं है कि मैं किसलिए इस शरीर में आया हूँ, मेरा लक्ष्य क्या है मुझे किधर जाना है। वह जिह्वा आदि इन्द्रियों से निरन्तर भोगों को भोगने में आसक्त हुआ विचर रहा है और इस भोग भोगने में ही अपने जीवन की इतिश्री मान बैठा है। भगवान् ने उसे 'विश्पति' बनाया है, शरीर–नगरी का राजा बनाया हैं, जिसमें मन, बुद्धि, प्राण, इन्द्रियाँ आदि अनेक प्रजाएँ निवास करती हैं! उसे इस शरीर–नगरी को ईश्वरीय साम्राज्य बनाना चाहिए था, अध्यात्म–साधना द्वारा आध्यात्मिक दृष्टि से उन्नत राष्ट्र बनाना चाहिए था। शरीर–राष्ट्र को भोगों से जर्जर न कर सबल, सप्राण और समनस्क करना चाहिए था। पर धिक्कार है इस आत्मा को! यह तो एक 'युवति' को चाट रहा है, अतिशय पुनः–पुनः चाट रहा है। प्रकृति ही यह युवति है जो नटी बनकर आत्मा को अपने साथ नचा रही है, भोग भुगा रही है। आत्मा प्रकृति को चाट रहा है, प्रकृति आत्मा को चाट रही है। इस प्रकार आत्मा लौकिक भोग–विलासों में आनन्द ले रहा है।

हे मेरे आत्मन्! इस मूढ़ता को त्यागो, अपने अन्दर ज्ञान की ज्योति जगाओ, 'सच्ची महत्ता क्या है' इसे जानो, सोते से उठ खड़े हो, इन्द्रियों के वशीवर्ती न हो, अपितु इन्द्रियों के स्वामी बनो। प्रकृति को न चाटकर परम प्रभु के अमृत–रस का आस्वादन करो। तुम्हारा उद्धार होगा, तुम महिमाशाली बन जाओगे।

❑

वेद मंजरी से

इस अंक में प्रकाशित सभी लेखों में व्यक्त भावों व विचारों के लिए लेखक स्वयं उत्तरदायी हैं और इसमें किसी आपत्तिजनक बात के लिए 'सम्पादक' एवं 'आर्य जगत्' उत्तरदायी नहीं होगा।

एक ही रास्ता

● महात्मा आनन्द स्वामी

पिछले अंक में बात हो रही थी कि क्रोध बुरी बला है। सवा करोड़ नहीं, सवा अरब गायत्री मंत्र का जाप कर लें, एक बार का क्रोध उस सारे फल को नष्ट कर देता है। जो अच्छे लोगों का संग करता है, वह तर जाता है–यह है सत्संग की महिमा। मानसिक साधना के लिए यह दूसरी बात है। तीसरी बात है–सेवा। परंतु सेवा का अर्थ क्या है? तीन प्रकार की शक्ति मनुष्य के पास होती है–बाहुबल, बुद्धिबल और धनबल। इस शक्ति को केवल अपने लिये ही नहीं अपितु दूसरों की भलाई के लिए प्रयोग करना, यह है सेवा। संसार का उपकार करना आर्यसमाज का मुख्य उद्देश्य है अर्थात् शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति करना। आर्यसमाज केवल इस देश के लिए नहीं है, सभी देशों के लिए है। किसी एक राष्ट्र के लिए नहीं, सभी राष्ट्रों के लिए है। आर्यसमाज न धर्म है न सम्प्रदाय, यह केवल एक आंदोलन है। इसका उद्देश्य है मनुष्य को सुखी बनाना।

प्रत्येक को अपनी ही उन्नति से संतुष्ट नहीं होना चाहिए अपितु दूसरों की उन्नति में अपनी उन्नति समझनी चाहिए। यह है सेवा की भावना। सेवा में मन बहुत जल्दी शुद्ध हो जाता है। अभिमान मिट जाता है। इससे पाप मिट जाता है। इसलिए जितनी भी शक्ति है उसके अनुसार अपने जीवन में सेवा करो।

अब आगे...

ध्यान क्या है? इसका उत्तर उस वार्तालाप से मिलता है जो भगवान राम और गुरू वसिष्ट में हुआ। भगवान् राम ने पूछा, "गुरूदेव ! इस शरीर को हम सब–कुछ खिलाते है, आत्मा को क्या खिलाये?"

भगवान् राम ही ऐसा प्रश्न पूछ सकते थे । गुरू वसिष्ठ ही उसका उत्तर दे सकते थे । आजकल तो कोई आत्मा की बात ही नहीं करता; आजकल शरीर ही हमारे समक्ष है । इसको खिलाओ–पिलाओ, इसके लिए कपड़े सिलवाओ, इसके लिए मकान बनवाओ और फिर एक दिन इसे मरघट में ले–जाकर छोड़ आओ। यह है इसका परिणाम ! कितने लोग प्रतिदिन वहाँ पहुँचते है ? कितने व्यक्ति इस बात को याद रखते हैं कि अन्ततः इसे वहाँ जाना है ? कितने लोग समझते हैं कि यह शरीर मैं नही हूँ, मैं इससे अलग हूँ ? भिन्न हूँ ?

कई भाई मुझे कहते हैं, "आनन्द स्वामी, हमें अपने साथ रख ले ।"

मैं पूछता हूँ, "क्या करोगे साथ रहकर ?"

वे कहते हैं, "आन्नद स्वामी की सेवा करेंगे ।"

मैं हँसकर कहता हूँ, "भाई, इसकी सेवा तुम क्या करेंगे।" इसकी सेवा मैं जैसी करता हूँ, ऐसी तुम नहीं कर सकते । इसे खिलाता हूँ, पिलाता हूँ, नहलाता हूँ, कपड़े पहनाता हूँ, इसे गुसलखाने में भी ले जाता हूँ, तुम क्या इसकी इतनी सेवा कर सकते हो?"

मैं यह नहीं कहता कि शरीर की रक्षा नहीं करनी चाहिए । करनी चाहिए अवश्य, क्योंकि आत्मा इसके अन्दर है । यही इसका मूल्य है । यह राजा जब चला जाता है, तब इसके झोंपड़े का कोई मूल्य नहीं रहता । तब सब लोग कहते हैं– इसे शीघ्र ले चलो, मरघट में छोड़ आओ ।

पिछले वर्ष मैं कैलास की यात्रा के लिए गया था न ! भारत से तिब्बत की ओर बढ़े तो बीच में पिस्सुलेक घाटी 16,750 फीट ऊँची, पहाड़ी आती है । इसे पार करके नीचे तिब्बत का चटियल और रेतीला मैदान आता है–सागर के धरातल से 15,000 फीट ऊँचा, इसलिए इसे संसार की छत कहते हैं। 27 दिन इस विस्तृत मैदान में हम घूमते रहे। हर ओर चट्टानें, हर ओर रेत, कोई वृक्ष नहीं, कोई पौधा नहीं। एक दिन मैंने आश्चर्य से अपने गाइड से पूछा, "कीचखम्बा! इस देश में वृक्ष नहीं, लकड़ी भी नहीं, मर जाने पर लोगों को जलाते कैसे हैं?

कीचखम्बा ने कहा, "आगे चलकर बताऊँगा।"

आगे गये हम, तो दाईं ओर का रेत एक ऊँचा टीला था। कीचखम्बा ने कहा– "यह वह स्थान है जिसे आप पूछते थे। इसे पैरी कहते हैं। तीन पुजारी यहाँ रहते हैं। जब किसी के यहाँ कोई आदमी मर जाता है तो उसके रिश्तेदार उसे यहाँ ले आते

thearyasamaj.org

हैं। पुजारी मुर्दे को काटकर, छोटे–छोटे टुकड़े करके इस टीले पर डाल जाते हैं, तब शंख बजाते हैं। शंख के बजते ही सैंकड़ों पक्षी आकर उन टुकड़ों को खाने लगते हैं। कुछ ही समय में सारी लाश समाप्त हो जाती है।"

मैंने उस टीले की ओर देखकर दिल ही दिल में कहा, 'हे भगवान्! मुझे तू तिब्बत में मत मारियो! करोलबाग में चलकर मारियो, नहीं तो यहाँ तो मेरा मुर्दा खराब होगा।'

परन्तु, मुर्दा खराब हो तो अच्छा, इस शरीर का मूल्य क्या है? बहुत सँभाल के हम रखते हैं, फिर एक दिन मिट्टी में दफ़ना देते हैं, नदी में बहा देते हैं, आग में जला देते हैं या टुकड़े करके पक्षियों के आगे डाल देते हैं कि वे आयें और इसे समाप्त कर दें। इसका मूल्य केवल तब तक है जब तक आत्मा उसके अन्दर है। आत्मा के कारण ही इसका मूल्य है। जिसके कारण इसका मूल्य है उसकी हम कभी चिंता नहीं करते। इसके सम्बन्ध में कभी यह भी नहीं सोचा कि आज इसे कुछ खिलाया या नहीं।

याद रखो ऐ दुनिया के लोगो! आत्मा यदि भूखी रहेगी तो कभी कुछ नहीं बनेगा। शरीर को भोजन अवश्य दो। जब तक इसके अन्दर आत्मा है, तब तक इसे भोजन देना आवश्यक है, परन्तु यह मत भूलो कि जिसके कारण शरीर की रक्षा करते हो, उसको भोजन देना भी आवश्यक है।

इसलिए भगवान् राम ने पूछा, "गुरुदेव! शरीर को हम प्रतिदिन भोजन देते हैं, आत्मा का क्या खिलावें?"

गुरु वसिष्ठ ने उत्तर दिया, "राम! इस आत्मा की भेंट ध्यान ही है और ध्यान ही इसका बड़ा अर्चन है, वही इसका पूजन है, उसके बिना यह आत्मा कभी प्राप्त नहीं होता।"

ध्यानोपहार एवात्मा ध्यानमस्य महार्चनम्।
बिना तेनेतरे मायमात्मा लभ्यते एव नो।।

तो श्रद्धा उत्पन्न करने के लिए पहली चीज है यह ध्यान। महर्षि दयानन्द ने कहा, "प्रत्येक आर्य को कम–से–कम दो घण्टे ध्यान लगाना चाहिए, क्योंकि ध्यान के बिना आत्मा में जागृति उत्पन्न नहीं होती, वह प्रकाशित नहीं होती।"

मेरा अनुभव भी यही कहता है कि जब तक ध्यान में न जाओ, तब तक आत्मा का पता नहीं लगता। ध्यान में पहुँचकर ही इसके दर्शन होते हैं। ध्यान में ही वह ऋतम्भरा बुद्धि उत्पन्न होती है जो वास्तविकता को सामने लाकर खड़ा कर देती है। इसके उत्पन्न होते ही अन्दर की ज्योति जग जाती है, अँधेरे का विनाश हो जाता है।

दुनिया में हम देखते हैं कि चोर, उचक्के और दूसरे अपराधी तभी तक निर्भय घूमते हैं जब तक सूर्य की रोशनी न हो; सूर्य की रोशनी होते ही वे सब भागते हैं, कहीं दिखाई नहीं देते। अन्दर की दुनिया में भी यही हाल है। अन्दर का सूर्य जब चमकता है, अपनी उस ज्योति को फैलाने लगता है जो करोड़ों और अरबों सूर्यों की रोशनी के समान है, तब पाप और अनाचार के चोर भाग जाते हैं, अंधेरा भाग जाता है, स्याही भाग जाती है। तब इस महान् ज्योति में आत्मा के दर्शन होते हैं। कैसे पाप होते हैं, यह फिर कभी बताऊँगा।

ध्यान के बाद श्रद्धा को पैदा करने का दूसरा साधन ज्ञान है। ज्ञान दो प्रकार का होता है– एक प्रकृति के सम्बन्ध में, दूसरा आत्मा के सम्बन्ध में। यह बिजली, नदियाँ, तारे, सितारे, चाँद, सूर्य, हवा, पानी, आग, यह सब प्रकृति है। प्रकृति के पृथिवी, फूल, पत्ते, वृक्ष, पहाड़, विभिन्न रूप है। इनसे सम्बन्धित ज्ञान को प्राप्त करके आत्मा से सम्बन्धित वास्तविकता को जानना पड़ता है समझना पड़ता है कि आत्मा क्या है, और वह क्या है जो आत्मा नहीं।

ध्यान के बाद श्रद्धा को पैदा करने का दूसरा साधन ज्ञान है। ज्ञान दो प्रकार का होता है– एक प्रकृति के सम्बन्ध में, दूसरा आत्मा के सम्बन्ध में। यह बिजली, नदियाँ, तारे, सितारे, चाँद, सूर्य, हवा, पानी, आग, यह सब प्रकृति है। प्रकृति के पृथिवी, फूल, पत्ते, वृक्ष, पहाड़, विभिन्न रूप है। इनसे सम्बन्धित ज्ञान को प्राप्त करके आत्मा से सम्बन्धित वास्तविकता को जानना पड़ता है समझना पड़ता है कि आत्मा क्या है, और वह क्या है जो आत्मा नहीं।

पंजाब में मकान बनाने से पूर्व लोग 'गौ' बनाते हैं, दिल्ली में शायद उसे 'पैड़' कहते हैं। प्रकृति के ज्ञान से आत्मा का ज्ञान प्राप्त करने के लिए पैड़ बनाई जाती है। इसको कहते हैं अविद्या के द्वारा विद्या को प्राप्त करना, अनात्म की खोज से आत्मा के पास पहुँचना। प्रकृति के रूप को अच्छी प्रकार देख लेने और समझ लेने के पश्चात् भक्त जब आत्मा को देखता है तो पुकारकर कहता है, 'ओ ठगिनी माया! मैंने तुझे देख लिया। मैंने तेरी वास्तविकता को पहचान लिया, पेट भर गया मेरा। अब मैं उसके पास जाऊँगा जो तेरी तरह चंचल नहीं, बदलता नहीं, धक्के नहीं खाता, जो शान्त और निश्चल है, जो सबको चलाता है स्वयं नहीं चलता, जो सबको खिलाता है स्वयं नहीं खाता, जो सबको देखता है, सबको जानता है, उसके पास जाना है मुझे। वह मेरा है, तू मेरी नहीं, तू किसी की भी नहीं। यह है ज्ञान की महिमा, ज्ञान से श्रद्धा उत्पन्न होने का उपाय!

तीसरी बात है अटल विश्वास– यह विश्वास कि भगवान् है। परन्तु आजकल तो बहुत–से लोग कहते हैं कि 'भगवान् है ही नहीं।' कुछ और लोग कहते हैं कि 'यदि है तो सोया पड़ा है, कुछ करता नहीं।' और कुछ दूसरे लोग कहते हैं, कि 'यदि सोया नहीं पड़ा है तो बहुत बूढ़ा हो गया है, उसे कुछ होता नहीं।'

कौन उन्हें बताये कि ईश्वर आज भी सुनता है, सदा सुनता आया है, सुनता रहेगा? पुकारनेवाला चाहिए, सुनने वाला तो सामने खड़ा है, वह कभी कहीं नहीं गया। सामवेद, 101वें मन्त्र कहता है, "जीवन को श्रीवाला (धर्म–अर्थ–काम–मोक्ष–वाला) बताने के लिए मेधा बुद्धि को परमात्मा से मांगो।" इसका वर्णन सामवेद के 346 वें मंत्र में आता है– "हे महान् परमेश्वर! जो मनुष्य अपने–आपको आपके अर्पण कर देता है, जो शारीरिक और मानसिक बल वाला है, इन्द्रियों का स्वामी है, उसकी टेर आप अन्तर्धान होकर सुनते हैं।"

वह अवश्य सुनता है, उसे पुकारकर देखो, सच्चे हृदय से पुकारो, अटल विश्वास के साथ पुकारो, उसका कीर्तन करते जाओ, यूँ अनुभव करो कि वह हर ओर है। हर समय उसके गुणों को याद करो, उसमें खो जाओ, फिर कुछ कहके देखो कि यह बात पूरी होती है या नहीं। महर्षि दयानन्द 'ऋग्वेदादि–भाष्य–भूमिका' में कहते हैं, "साधारण पानी से लेकर मोक्ष तक भगवान् से माँग।" माँग कि वह देनेवाला है, माँग कि उसके भण्डार में किसी भी वस्तु की कमी नहीं। जो व्यक्ति इस प्रकार अटल विश्वास के साथ ईश्वर के नाम का कीर्तन करते हैं, उनकी वाणी में ऐसी मिठास, ऐसा आकर्षण आ जाता है कि सुनने वाले मोहित हो जाते हैं। अकबर के दरबार का गवैया था तानसेन। कहते हैं कि वह जब मल्हार गाता तो वर्षा होने लगती। जब वह दीपक राग गाना आरम्भ करता तो दीपक जल जाते। एक दिन अकबर ने कहा, "तानसेन! यह सब–कुछ तुमने जिससे सीखा है, उसका संगीत हमें भी सुनवाओ!" तानसेन ने कहा, "शहंशाह! मेरे गुरु स्वामी हरिदास हैं, आपके दरबार में वे नहीं आयेंगे। मेरी तरह उन्हें आपसे कुछ लेना देना नहीं है। वे जंगल में रहते हैं पत्तों की झोपड़ी बनाकर। कहीं वहीं मौज आ जाए तो अपना दुतारा लेकर गाने लगते हैं, किसी के लिए वे गाते नहीं?"

अकबर ने कहा, "वे नहीं आ सकते, तो चलो हम उनके पास चलें, एक बार उनके दर्शन कर लें!"

तानसेन बादशाह को लेकर उस जंगल में गये, जहाँ हरिदास स्वामी रहते थे। देखा–हरिदास कुटिया के बाहर ध्यान में मग्न हुए हैं, चुपचाप शांत। एक दुतारा उनके पास खड़ा है परन्तु वह भी बेआवाज।

बादशाह ने धीरे–से कहा, "तानसेन! यहाँ आकर भी क्या हम प्यासे जाएँगे? क्या कोई ऐसा उपाय नहीं कि स्वामी हरिदास गाने लगें?"

तानसेन ने कहा, "प्रयत्न करता हूँ शहंशाह, आप चुपचाप खड़े रहिये!"

और अपनी सितार उठाकर उसने बजाना शुरू कर दिया। थोड़ा ठीक बजाया, फिर जान–बूझकर गलत बजाने लगे। हरिदास ने सुना तो झुंझला उठे; बोले, "गलत बजाते हो तानसेन सुनो!" और अपना दुतारा उठाकर वे बजाने लगे। उसके साथ–साथ गाने लगे। जंगल का आकाश गूँज उठा। वृक्ष और पौधे झूम उठे। जंगल के हिरन स्वामी हरिदास के पास आकर खड़े हो गए। जंगल के पक्षी शान्त हो गये। ऐसा प्रतीत हुआ जैसे चलती हुई हवा भी ठहर गई। बादशाह मस्त हो गये। कितनी देर हो गई, यह भी उन्हें पता नहीं लगा। अन्ततः जब हरिदास ने गाना बन्द किया तो बादशाह और तानसेन प्रणाम करके वापस आ गये। रास्ते–भर बादशाह बोल नहीं सके। संगीत की मधुर ध्वनि अभी तक उनके कानों में गूँज रही थी। रात्रि के समय बादशाह ने कहा, "तानसेन! तुम बहुत अच्छा गाते हो, भारतवर्ष में सबसे बड़े गायक हो तुम, फिर भी तुम्हारे गाने में वह रस क्यों नहीं, वह मस्ती क्यों नहीं जो हरिदास के गाने में है?" तानसेन ने हाथ जोड़कर कहा, "शहंशाह! मुझमें और हरिदास में बहुत अन्तर है। मै हूँ दिल्लीपति का गवैया, दिल्ली के लिए गाता हूँ। स्वामी हरिदास जगत्पति के गायक हैं; उसके लिए गाते हैं, जो करोड़ों दिल्लीपतियों को उत्पन्न और नष्ट कर देता है। जितना गुड़ हो उतना ही मीठा होता है। वे बड़े दरबार के गायक हैं, मैं छोटे दरबार का गायक हूँ।"

अकबर ने सुना, सोचा और चुप हो गया। धीरे–से उसने अपने मन–से कहा, "जो भगवान् के गुण गाता है, उसकी वाणी में रस होगा ही।"

परन्तु अब समय पूरा हो गया है, बाकी बात कल कहूँगा।

ओ३म् तत् सत्!

शेष अगले अंक में....

thearyasamaj.org

सत्य के उपासक : महर्षि दयानन्द सरस्वती

● महात्मा चैतन्यमुनि

आज हमारे समाज में धर्म के नाम पर अनेक प्रकार की भ्रान्तियां फैली हुई हैं। इसी कारण जो धर्म व्यक्तियों को आपस में मिलकर रहना सिखाता है वही धर्म आज टकराव और अलगाव का कारण बन गया है। इस कथित धर्म और मत एवं मजहब के कारण आज मानव ही मानव के खून तक का प्यासा बन गया है। जिससे भला इस प्रकार की भावना प्रश्रय पाती हो उसे हम धर्म की संज्ञा कैसे दे सकते हैं? धर्म तो एक ऐसी सार्वभौमिक व्यवस्था है जिसके सही आचरण से किसी प्रकार का संघर्ष, वैर वैमनस्य नहीं बल्कि आपसी भाईचारा और सुख–शान्ति का सृजन किया जा सकता है। धर्म तो एक ऐसा तत्व है जो व्यक्ति के भीतरी मानवीय मूल्यों की न केवल स्थापना करता है बल्कि उसे और भी अधिक विशाल से विशालतर बनाता है। आज जो धर्म के नाम पर टकराव का कारण बना है यह वास्तव में धर्म है ही नहीं क्योंकि धर्म में किसी प्रकार के स्वार्थ और मार–काट को स्थान ही नहीं है। असल में धर्म के सही स्वरूप को भूलकर व्यक्ति जब धर्म को अपने नीहित स्वार्थों तक सीमित कर देता है तब इस प्रकार की अव्यवस्था और अलगाब पैदा होता है। व्यक्ति की अपनी न्यूनताओं के कारण जब धर्म पाखण्ड और आडम्बर का रूप ग्रहण कर लेता है तो ऐसी स्थिति होती है। ऐसी स्थितियों को बदलकर सत्य धर्म की स्थापना करने के लिए समय–समय पर इस धरती पर महापुरुष अवतरित होकर भटके हुए लोगों का मार्गदर्शन करते हैं। कुछ तथाकथित महापुरुष भी किसी न किसी स्वार्थ के वशीभूत होकर संसार का पूरी तरह से भला करने में सक्षम नहीं हो पाते हैं बल्कि या तो अपना एक अलग सम्प्रदाय पैदा कर देते हैं या फिर धर्म के सही स्वरूप को बिगाड़कर उसमें कुछ ऐसे तत्व मिला देते हैं जो आगे चलकर लोगों में झगड़े और अलगाव का कारण बनते हैं। धर्म के सही स्वरूप की स्थापना करने और मानवीय धर्म का मार्ग प्रशस्त करने के लिए महापुरुष का स्वयं सब प्रकार की एषणाओं से ऊपर उठना जरूरी है। ऐसा निःस्वार्थ महापुरुष ही जगत् का सही अर्थों में कल्याण कर सकने में समर्थ होता है। सत्य एक ऐसा तत्व है जिसके पक्ष में खड़ा होना सबसे प्रमुख है। यदि हम सही अर्थों में चिन्तन करें तो सत्य ही धर्म है। जहां कहीं भी हम असत्य से समझौता करने के लिए लालायित हो जाते है, समझिए वही हम अधर्म का पक्ष ले रहे हैं। सत्य की स्थापना और उसका कार्यान्वयन ही मानों धर्म का सबसे उत्तम रूप है। इस सत्य के पक्ष में भी कोई–कोई विरला ही व्यक्ति दृढ़ता के साथ खड़ा रह सकता है अन्यथा किसी न किसी प्रलोभ में आकर व्यक्ति अधर्म के पथ पर भटक जाता है। इसलिए हम इतिहास में महर्षि दयानन्द सरस्वती जी को अलग ही पंक्ति में खड़ा पाते हैं। उन्होंने किसी भी परिस्थिति में सत्य से अलग होना स्वीकार नहीं किया, भले ही इसका इन्हें बहुत बड़ा मूल्य चुकाना पड़ा हो। किसी ने ठीक ही कहा है कि महापुरुष वह है जो सत्य और न्याय के पथ पर बड़े से बड़ा दुःख आने पर भी त्याग नहीं करता है। चाहे लक्ष्मी आए या चली जाए, लम्बी आयु मिले या अभी मृत्यु का ग्रास क्यों न बन जाना पड़े, कोई स्तुति करे या निन्दा करे मगर महापुरुष न्याय के पथ से कभी विचलित नहीं होता। महर्षि दयानन्द जी में हम यही विशेषता पाते हैं। इसलिए योगीराज अरविन्द जी ने महर्षि जी के बारे में श्रद्धांजलि देते हुए कहा कि 'यदि हम संसार के समस्त महापुरुषों को पर्वतों की चोटियां माने लें तो महर्षि दयानन्द जी को सबसे ऊँची चोटी मानना होगा।'

जहां तक मैं समझता हूँ महर्षि दयानन्द सरस्वती जी एक मात्र ऐसे महापुरुष हुए है जिन्होंने समाज सुधार के क्षेत्र में ऐसे मील के पत्थर स्थापित किए हैं जिनके मागदर्शन में आज भी हम सब प्रकार के सुधारों की आधारशिला रख सकते हैं। यह ठीक है कि आज भी महर्षि जी के सार्वभौमिक सत्यों का आकलन सही ढंग से नहीं हो पाया है मगर अन्ततः समूची मानवता उन शाश्वत सूत्रों पर चलकर ही सुख और शान्ति प्राप्त कर सकती है। उन्होंने विश्वबन्धुत्व की दिशा में भी महत्वपूर्ण नियम हमारे रखे हैं। उन्होंने जो सत्य वेद से ढूंढ निकाले उनके विपरीत कभी कोई समझौता नहीं किया। वे महान सत्यवादी थे। उनका जीवन सत्य से आरंभ हुआ, सम्पूर्ण जीवन सत्य के पक्ष में संघर्ष करते रहे और सत्य के लिए ही उन्होंने अपने जीवन को बलिवेदी पर अर्पित कर दिया। सत्यता के प्रति वे इतने जागरूक थे कि उन्होंने किसी प्रलोभन को सत्य से ऊपर नहीं होने दिया। उनके जीवन में प्रलोभन भी आए, अनेक प्रकार के असह्य दुःख भी आए और उन्हें मारने तक के प्रयास किए गए मगर उन्होंने वेद पथ से मुंह नहीं मोड़ा। इसके विपरीत उनका आदर्श वाक्य रहा–*'सत्य को ग्रहण करने और असत्य को त्यागने में सर्वदा उद्यत रहना चाहिए।'* यह बात पूर्णतः सत्य है कि अन्ततः सत्य की ही विजय होती है और व्यक्ति,समाज या देश सबकी उन्नति का आधार यह सत्य ही है। **सत्यमेव जयते नानृतम्**–यह अमर वाक्य ही समाज सुधार का सबसे बड़ा गुरुमन्त्र है। असत्यवादी जहां अपना अहित करता है वहीं वह समाज और देश को भी रसातल में ले जाता है। आज तो समाज में सत्य भी अलग–अलग हो गए हैं मगर महर्षि जी के अनुसार सत्य कभी भी दो नहीं हो सकते।

जब वे कार्यक्षेत्र में उतरे तो उस समय धर्म का सही स्वरूप लुप्तप्राय हो चुका था। चारों ओर पाखण्ड और आंडबर का बोलबाला था। पाखण्डी लोग आम जनता को दोनों हाथों से लूट रहे थे। जात–पात का कोढ़ समाज को बुरी तरह से झिंझोड़ रहा था। भाई–भाई के खून का प्यासा हो गया थ। अपने अपने मत और मजहब की काराओं में ग्रसित लोग सामूहिक मानवता से बहुत दूर भटक गए थे। देश इन्हीं कुछ मूलभूत कारणों से गुलामी की जंजीरों में जकड़ा हुआ था। महर्षि दयानन्द जी ने वेद के आधार पर देश और समाज के सामने उन्नति के नए आयाम स्थापित किए। उनके विचारों से समाज और देश के लोगों ने अंगड़ाई ली और उन्होंने अपने भीतर एक नई चेतनता का अनुभव किया। महर्षि दयानन्द जी ने बिना किसी लाग लपेट के आम जनता के सामने समस्त सत्यों को उजागर किया जिनके कारण क्रान्तिकारी परिर्वतन सब जगह दिखाई देने लगे। उन्होंने गहराई से पतन के कारणों को खोज निकाला और उनका समाधान भी जनता के सामने रखा। जात–पात, धर्म–अधर्म, सत्य–असत्य, प्रकृति, जीवात्मा और परमात्मा आदि का विवेचन वेद और विज्ञान के आधार पर प्रस्तुत किया। स्थान–स्थान पर प्रवचन दिए, शास्त्रार्थ किए और लेखन का कार्य किया। सत्य के उपासक ने अपने ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश में सब विषयों की समालोचना निष्पक्ष भाव से प्रस्तुत की। सत्य के उपासक ने अपने ग्रन्थ का नाम भी 'सत्यार्थप्रकाश' ही रखा। उनके मन्तव्यों का पता हमें इस ग्रन्थ की भूमिका से ही चल जाता है जिसमें उन्होंने साफ शब्दों में कहा है कि उनका न तो किसी प्रकार के अलग मत–सम्प्रदाय चलाने की मनसा है और न ही किसी के मन को दुःखाने की, बल्कि उनका कहना है कि मैंने वेद के आधार पर समस्त सत्यों को विवेकी लोगों के मनन और चिन्तन के लिए इस ग्रन्थ में लिख दिया है। उनका लक्ष्य सत्य और असत्य का विवेचन करना रहा है। वे किसी विशेष मत या मजहब के पक्षधर न होकर समूची मानवता के हितैषी थे। उन्होंने मानव मात्र की एक ही जाति मानी है, हां गुण दोषों के आधार पर उनमें विभिन्नता हो सकती है मगर उससे मानवीय प्रेम और सौहार्द को नहीं छोड़ना चाहिए। उन्होंने अनेक देवी देवताओं के स्थान पर एक परमात्मा की पूजा करने का विधान करते हुए परमात्मा के गुण–कर्म और स्वभाव को अपने भीतर धारणा करने की प्रेरणा लोगों को दी। इस तरह से भी उन्होंने एकता का सूत्र हमारे सामने रखा है। उनका कथन था कि अनेक पूजा पद्धतियों के कारण मानव–मानव में एकता का अभाव हो जाता है तथा वैर–विरोध को प्रश्रय मिलता है। इसी प्रकार उन्होंने व्यक्तियों के द्वारा रचे गए ग्रन्थों को प्रामाणिक न मानकर परमात्मा के ही ज्ञान वेद को प्रमाणित मानने के लिए प्रेरित किया। उन्होंने प्रबल तर्कों के आधार पर प्रमाणित किया कि वेद परमात्मा का दिया हुआ ज्ञान है जो मानव मात्र के लिए समान रूप से। उनका कहना है कि वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है। इसी के पठन–पाठन से व्यक्ति मानवीय गुणों से परिपूर्ण हो सकता है। उनकी एक नहीं बहुत सी ऐसी विलक्षणताएं है जो उनके मानव हितैषी होने को प्रमाणित करती हैं। मानव मात्र को एक मानना, वेद को व्यावहारिक रूप से परमात्मा का ज्ञान मानना, उसी एक परमात्मा की उपासना करने के साथ–साथ उन्होंने एक भाषा और एक धर्म को मानने का भी आग्रह किया है। इसी से मानव–मानव में प्रेम और सौहार्द स्थापित हो सकता है और देश एवं समाज उन्नति के पथ पर अग्रसर हो सकता है। जितनी आस्था उन्हें परमात्मा पर थी उतनी ही आस्था परमात्मा के ज्ञान वेद पर भी थी। उनका कथन था कि वेद को अनुकूल जो कुछ भी है वह सत्य और धर्म है तथा जो जो उसके विपरीत है वह असत्य और अधर्म है। उन्होंने तथा कथित धर्म के ठेकेदारों को सामने मानव एकता के लिए यह विचार प्रबलता के साथ रखा कि यदि आप लोग वेद के आधार पर सत्य को ग्रहण करके असत्य को त्याग दें तो जो शेष बचेगा वही सच्चा धर्म है और वही मानवीय एकता और सुख का आधार भी है। इसी एक सूत्र से समाज और देश में ही नहीं बल्कि समूचे संसार में एकता स्थापित हो सकती है।

उनके प्रबल तर्कों का उत्तर उस समय के किसी भी संप्रदाय या मजहब के ठेकेदार के पास नहीं था क्योंकि उन लोगों के पास अपने पाखण्डों को सत्य सिद्ध करने के लिए कोई वैज्ञानिक

शेष पृष्ठ 05 पर ☞

thearyasamaj.org

उत्कृष्ट शङ्का समाधान

● स्वामी विवेकानन्द परिव्राजक

शंका– 'मिश्रित कर्म' क्या है?

समाधान– जब किसी कर्म में कुछ अंश तो अच्छाई का, और कुछ अंश बुराई का हो, यानी दोनों इकट्ठे होते हैं, तो उसको मिश्रित-कर्म कहते हैं।

एक उदाहरण सुनिए– एक परिवार में सब लोग घर में रात को खाना खा चुके थे। इतने में अचानक दरवाजे पर घंटी बजी। जब दरवाज़ा खोला तो अपना एक रिश्तेदार बड़ी दूर से आ रहा था। वो रात को साढ़े दस बजे अचानक आ गया। उसने पहले दूरभाष के द्वारा अपने आने की सूचना भी नहीं दी। आकर बोला– "देखो जी, मेरी गाड़ी लेट हो गई, मेरे पास रास्ते में खाना था, वो भी खत्म हो गया। और मुझे जोर से भूख लगी है, मेरे मोबाइल फोन की बैटरी डाउन हो गई, मैं सूचना भी नहीं दे पाया। मेरे लिए खाना लाओ, नहीं तो रात को नींद नहीं आएगी।"

वह कितने बजे रात को बोला? साढ़े दस बजे। खाना खत्म हो गया था। अब बताइए, फिर दोबारा दाल बनाओ, रोटी बनाओ, सब्जी बनाओ, खाना बनाते-खिलाते रात को बजेंगे साढ़े बारह। सब काम निपटाने में एक भी बज सकता है।

रिश्तेदार है, भूखा तो सुला ही नहीं सकते। रिश्तेदार आपको भी तंग करेगा कि – "मुझे खाने को दो, मुझे नींद नहीं आ रही है, मैं करूँ क्या। बाजार में अब क्या मिलेगा, साढ़े दस बज रहे हैं, सब दुकानें बंद हो गईं।" व्यक्ति मन में क्या सोचता है? कैसे लोग हैं, पहले से बताते भी नहीं हैं। हम पहले से बनाकर रखते। अब रात के साढ़े दस बजे आकर कहते हैं– "जी खाना खिलाओ।"

अगर रिश्तेदार को खाना नहीं खिलाया तो 'अशुभ-कर्म' है। और खिलाया तो खिलाने के दो ऑप्शन हैं – जो यजमान रात को नए सिरे से भोजन पकाएगा वह या तो खुश होकर के खिलाएगा या दुःखी होकर खिलाएगा? अगर खुश होकर खिलाएगा, तो यह होगा 'शुभ-कर्म'। और अगर दुःखी होकर खिलाएगा, तो यह होगा 'मिश्रित-कर्म'। खाना खिलाया, यह तो अच्छी बात है। लेकिन दुःखी होकर के खाना खिलाया, यह बुरी बात है। दोनों मिक्स हो गई न। उतना पुण्य माइनस हो जाएगा, उतना पुण्य कट जाएगा। आप सोच लेना, फिर जैसा करना हो।

75. शंका– जो मनुष्य जन्म से ही अपाहिज होता है, मंद-बुद्धि होता है। जिसका दुःख पैदा होने वाली संतान और माता-पिता दोनों को मिलता है। तो यह किसका कर्मफल है।

समाधान– यह माता-पिता और संतान, तीनों का कर्मफल है। इसलिए जन्म से ही व्यक्ति विकलांग और मंद-बुद्धि हुआ। तीनों के कर्म आपस में मिलते-जुलते हैं। इसलिए ईश्वर ने सोच-समझकर ऐसी संतान, ऐसे माता-पिता के यहाँ भेजी है। संतान के कर्म भी खराब हैं, उनको विकलांग बनाना है और माता-पिता के भी खराब हैं; उनकी विकलांग संतान देनी है। तो तीनों मिलके अपना कर्मफल भोगेंगे। यह परमात्मा का कर्मफल विधान है। इसका प्रमाण 'न्याय-दर्शन' में लिखा है।

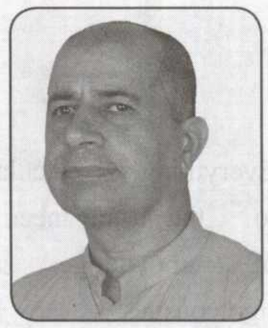

76. शंका–मनुष्य का जन्म पहला है कि अन्य प्राणियों का?

समाधान– उत्तर यह है कि पहला जन्म कोई नहीं। पहला जन्म मानते ही भयंकर समस्या उत्पन्न होगी। मान लो, ईश्वर ने किसी आत्मा को पहला जन्म दिया, तो प्रश्न होगा कि, कर्म के आधार पर देगा या बिना कर्म के आधार पर तो पीछे कर्म हुआ न तो वो पहला जन्म नहीं हुआ न। बस यही उत्तर है। पहला जन्म कोई नहीं है।

जब भी जन्म मिलेगा वो कर्म के आधार पर मिलेगा। और वो कर्म कहाँ से आएगा, उससे पिछले जन्म का। और उससे पिछले जन्म में जो कर्म आया, वो कहाँ से आया, उससे पिछले को। उससे पिछले का, उससे पिछले का। इसलिए पहला जन्म कोई नहीं है।

दर्शनयोग महाविद्यालय
रोजड़वन, गुजरात

☞ पृष्ठ 04 का शेष

सत्य के उपासक : महर्षि...

आधार नहीं था। इस प्रकार उन्होंने अपने समय में समूचे भारत में ही नहीं बल्कि पूरे संसार में विचारों की एक नई धारा को प्रवाहित कर दिया। भारतीय ही नहीं बल्कि मैक्समूलर जैसे विदेशी लोग भी जो भारतीयों को असभ्य और वेदादि सत्य ग्रन्थों को गडरियों के गीत कहते थे, उन्होंने भी भारत की महानता और वेद के सत्य को स्वीकार किया। लोगों के पास जब इस सत्य के पुजारी के तर्कों का कोई उत्तर नहीं मिला तो उनका प्रबल विरोध भी हुआ। उन पर कीचड़ और पत्थर ही नहीं जहरीले सांप तक फेंके गए। उन्हें विष देकर समाप्त करने के प्रयास हुए, लठैतों द्वारा उन्हें समाप्त कराना चाहा, उन्हें अन्य अनेक प्रकार से बदनाम करना चाहा मगर वे सबको क्षमा दान ही करते गए और बड़े प्यार से वेद पथ को अपनाने का आग्रह करते रहे। उन्होंने सत्य को किस सीमा तक आत्मसात किया हुआ था वह इस बात से ही पता चल जाता है कि उन्होंने कभी किसी से किसी प्रकार का बदला लेने की नहीं सोची। मौन होकर सत्य के पक्ष में खड़े रहकर सब कुछ सहा। अपने विरोधियों के लिए भी मंगल कामनाएं ही करते रहे। पत्थर और कीचड़ फैंकने वालों तथा गालियां देने वालों को भी मिठाइयां बांटते रहे। उनका कथन था कि जब कोई डाक्टर किसी रोगी का उपचार करने के लिए उसे कड़वी दवाई देता है तो उस डाक्टर को उस मरीज का कोप भाजन होना ही पड़ता है मगर डाक्टर तो अन्ततः उस रोगी का हित ही चाहता है। वे भी एक ऐसे ही डाक्टर थे जो समूची मानवता के रोग को दूर करके उसे स्वस्थ और सबल बनाना चाहते थे। इसलिए उन्होंने एक कुशल चिकित्सक के समान सब कुछ सहते हुए भी अपना उपचार जारी रखा। आज हम उनके अत्यधिक धन्यवादी है क्योंकि उन्होंने समाज और देश की उन्नति के लिए चतुर्दिक् विकास हेतु हमें सबल आधार प्रदान किए हैं। वे सत्य के ऐसे विलक्षण उपासक थे कि उन्होंने एक बार कहा–चाहे मेरी उंगलियो को बत्ती की तरह जलाना आरंभ कर दें तब भी मैं सत्य का ही पक्ष लूंगा। यही नहीं उनका कथन था कि चाहे मुझे तोप के आगे बान्धकर उड़ाने का आदेश दिया जाए तब भी मैं सत्य का ही पक्ष लूंगा।

हम सबका कर्तव्य बन जाता है कि हम उनके बताए हुए सत्य मार्ग पर दृढ़ता के साथ खड़े हो जाएं। आज व्यक्ति, परिवार, समाज और देश की जो बुरी स्थिति है उस सबका कारण एकमात्र यही है कि हम लोगों ने सत्य को निर्वासित कर दिया है। धर्म ने आडम्बर का रूप लिया है, आत्मा-परमात्मा के नाम पर लोगों को भ्रमित किया जा रहा है। सब जगह धर्म की दुकानें सज गई हैं मगर धर्म का तत्व जो सत्य है वह कहीं दूर छूट गया है। आज कथनी और करनी में साम्यता नहीं रही है। महर्षि दयानन्द जी ने बचपन में ही सच्चे शिव को प्राप्त करने और मृत्युंजयी बनने का संकल्प लिया था और सत्य के आधार पर उन्होंने उन लक्ष्यों को तो प्राप्त किया ही इसके साथ-साथ समाज, देश और समूचे संसार का कितना बड़ा हित कर गए। हम सत्य के पक्ष में दृढ़ता के साथ खड़े होने का संकल्प लें इससे जहां हमारा अपना हित वहीं दूसरी और समाज और देश का भी उद्धार होगा।

महादेव, तहसील सुन्दर नगर,
मण्डी (हि॰प्र॰)

वैदिक प्रार्थना

सुषारथिरश्वानिव यन्मनुष्यान्नेनीयतेऽभीशुभिर्वाजिन इव।
हृत्प्रतिष्ठं यदजिरं जविष्ठं तन्मे मनः शिवसंकल्पमस्तु।।
यजु. 34.6

Just as an expert coachman
controls the reins and directs his horses,
so also our mighty mind controls our actions.
May my restless and
fickle mind
always remain full of noble thoughts.

कुशल सारथि ज्यों तुरंगों[1] को कशा[2] से हांकता है
रास कसता, ढील देता;
ठीक वैसे ही जो मनुष्यों को चलाता
है हृदय के बीच बैठा अजर, अतिशय वेगशाली,
मन वही मेरा घुमक्कड़, सदा शुभसंकल्पमय हो!

thearyasamaj.org

Thus Spoke Swami Dayanand

❖ Everything calculated to the advancement of knowledge and righteousness is like poison to begin with, but like nectar in the end.

❖ I treat the foreigners in the same way as I treat my own countrymen in recognition of our common humanity.

❖ I consider it the first and the foremost duty of every man to proclaim the truth without fear or favour.

❖ There are no gods. The multitude of names like Indra signify not different Divine beings but different aspects of one Absolute Existence.

❖ He (God) is One who is an absolute Friend of all, unfriendly or indifferent to none. No man can ever be like Him.

❖ His names are without number because His nature, attributes and activities are infinite. One name stands for each of them.

❖ *Mangalacharana* consists in constantly obeying the Will of God by the practice of truth and justice, without prejudice or partiality, as enjoined by the Vedas, under all conditions and circumstances.

❖ Verily, that man alone can become a great scholar who has had the advantage of three good teachers, viz., father, mother, and preceptor.

❖ The mother's healthy influence on her children surpasses that of everyone else.

❖ No other person can equal a mother in her love for her children, or in her anxiety for their welfare.

Compiled by — Satyapriya, 09868426592

(Sourced from the English translation of 'Satyarth Prakash' by Dr. Chiranjiv Bhardwaj and published as 'The Light of Truth' from D.A.V. Publication Division)

वाजपेय यज्ञ

● कृपाल सिंह वर्मा

(यजुर्वेद नवम् अध्याय की शतपथ ब्राह्मण में की गयर व्याख्या)

उपनिषद् ग्रन्थ वेदों की आध्यात्मिक व्याख्याएं हैं। स्मृति ग्रन्थ वेदों की आधिभौतिक अर्थात् सामाजिक व्याख्याएं हैं। ब्राह्मण ग्रन्थ वेदों की आधिदैविक अर्थात् वैज्ञानिक व्याख्याएं हैं।

शतपथ ब्राह्मण में यजुर्वेद के मन्त्रों की वैज्ञानिक व्याख्या की गयी है। ब्राह्मण में यजुर्वेद इसके नवम् अध्याय को वाजपेय यज्ञ के रूप में प्रस्तुत किया गया है। अग्नि, विद्युत् तथा सूर्य का उपयोग दिव्य शक्ति प्राप्त करने के लिए करना ही वाजपेय यज्ञ है। इन प्राकृतिक शक्तियों का विशेष वर्णन धनुर्वेद में रहा होगा। वाजपेय यज्ञ करने से शक्तिशाली होकर राजा सम्राट् हो जाता है। अग्नि, इन्द्र टर्ब विद्युत) तथा सूर्य की शक्ति का उपयोग विभिन्न प्रकार के शक्तिशाली शस्त्रों के निर्माण में करना ही वाजपेय यज्ञ है।

(1) **''देव सवित: प्रसुव यज्ञं प्रसुव यज्ञपलिं भगाय।**

दिव्यो गन्धर्व: केतपू: केतं न: पुनातु वाचस्पतिर्वाचं

न स्वदतु स्वाहा।'' (यजु.9–1)

अर्थ– शतपथ ब्राह्मण काण्ड–5 अध्याय–1, ब्राह्मण–।, कण्डिका–16

परमात्मा उपदेश करता है कि हे मनुष्यो सूर्य देवता आपको यज्ञ करने के लिए प्रेरित कर रहा है। देखो! शक्तिशाली सूर्य–किरणें पृथिवी रूपी वेदी पर आहुति के रूप में गिर रही हैं। इनसे विभिन्न प्रकार के अन्न, विभिन्न प्रकार से पदार्थ उत्पन्न हो रहे हैं। वे अन्न आदि पदार्थ तुम्हें शक्ति प्रधान करेंगे। तुम लोग भी इस प्रकार विभिन्न प्रकार के शक्तिदायक पदार्थ ऐश्वर्य प्राप्त करने के लिए उत्पन्न कर सकते हो। इस प्रकार के पदार्थो के विज्ञान को जानने से आपकी बुद्धि पवित्र होगी।

(2) **ध्रुवसदं त्वा नृषदं मन: सदमुपायम गृहांतोऽसीन्द्राय त्वा।**

जुष्टं गृहणाम्येष ते योनिरिन्द्राय त्वा जुष्टतमम्।।'' (यजु. 9–2)

अर्थ– ब्राह्मण–2 कण्डिका–4

यह इन्द्र अर्थात् विद्युत् शक्ति इस पृथिवी लोक में पायी जाती है। **''ध्रुवं इयं पृथिवीम्''** यह पृथिवी ही ध्रुव है। यह शक्ति प्राणों के रूप में मनुष्यों में पायी जाती है। मन से संकल्प–विकल्प भी आत्मा प्राण शक्ति से ही करता है। इस विद्युत् शक्ति को विज्ञान एवं उपाय द्वारा प्राप्त किया जा सकता है। इस विद्युत् शक्ति का स्थान यह पृथिवी है। इसके युक्ति पूर्वक उपयोग से तुम शक्तिशाली बन सकते हो।

(3) **''अप्सुषदं त्वा घृतसदं व्योमसदमुपायाम गृहीतोऽसीन्द्राय,**

त्वा जुष्टं गृहणाम्येष ते योनि: इन्द्राय त्वा जुष्टतमम्।। (यजु 9–2)

अर्थ – ब्राह्मण–2, कण्डिका –5

वह विद्युत् शक्ति जल में निवास करती है। घृत में निवास करती है अर्थात् विभिन्न रासायनिक क्रियाओं से अभिव्यक्त होती है। वह अन्तरिक्ष में स्थित बादलों में अभिव्यक्त होती है। उस शक्ति को आप विज्ञान तथा उपायों से प्राप्त कर सकते हैं। उस इन्द्र अर्थात् विद्युत् का उपयोग आप लोग किसी भी युक्ति से शक्ति तथा समृद्धि बढ़ाने के लिए कर सकते हैं। उस इन्द्र को प्राप्त करने के लिए श्रेष्ठतम् वैज्ञानिक यज्ञ अर्थात् वैज्ञानिक विधियों का प्रयोग करें।

(4) **पृथिवीसदं त्वाऽन्तरिक्षद दिविसदं देवसदं, नाकसदमुपायम गृहीतोऽसीन्द्राय त्वा जुष्टं गृहणाम्येष ते योनिरिन्द्राय त्वा जुष्टतमम्।।''**

(यजु. 9/2)

अर्थ – ब्राह्मण–2, कण्डिका–6

पाठक विद्युत् को पुकारते हुए कहता है–

''पृथिवी आसन वाले तुझको, अन्तरिक्ष आसन वाले तुझको, द्यौलोक आसन वाले तुझको, विद्युत् शक्ति को मैं उपायों से तुझे ग्रहण करता हूँ तथा श्रेष्ठतम शक्ति व समृद्धि प्राप्त करने के लिए तेरा उपयोग करता हूँ।''

(5) **''अपां रसमुदवयं सूर्येसन्तं समाहिलं अपां रसस्य यो रसस्तं वो गृहणाम्युत्तममुपायम् गृहीतोऽसीद्राय त्वा जुष्टं गृहणाम्येष ते योनिरिन्द्राय त्वा जुष्टतमम्।''** (यजु. 9/3)

अर्थ – ब्राह्मण–2, कण्डिका–7

विद्युत् प्राण वायु है। यह जलों का रस अर्थात् जलों का बल है। ''जलों के बलप्रद रस सूर्य से ठहरे हुए हैं। जलों के रस का जो उत्तम रस है, उसको मैं तुम्हारे लिए ग्रहण करता हूँ। इन्द्र के लिए तुझको ग्रहण करता हूँ। यह तेरी योनि अर्थात् कारण है। तुम सबसे उपयुक्त को इन्द्र के लिए।'' यह जो विद्युत् है यह जलों का रस है। यह सूर्य में समाहित है। इस विद्युत् शक्ति को मैं सूर्य किरणों से प्राप्त करता हूँ।

(6) **ग्रहा: ऊर्जाहुतय: व्यन्तो विप्राय मति।**

तेषां विशिप्रियाणां वोऽहमइषम् ऊर्जां समग्रभं

उपयाम गृहीतोऽसीन्द्राय त्वा जुष्टं गृहणामी एष:

ते योनिरिन्द्राय त्वा

जुष्टतमम् इति सादयत्यूम्वै

रसो रसमे वैतेनोज्जयति

(यजु 9/4 पाठान्तर)

अर्थ तुम ऊर्ज आहुति वाले ग्रह विप्रों की मति उभारने वाले हो। तुमसे रस अर्थात् विद्युत् शक्ति को ग्रहण करता हूँ। यह ग्रह विद्युत् शक्ति को योनि अर्थात् कारण हैं। इन्द्र के लिए उपयुक्त तुमको।

हमारी पृथिवी एक चुम्बक है। इसी प्रकार सभी ग्रह चुम्बक है। इन सबके चुम्बकीय क्षेत्र हैं। प्रत्येक ग्रह अपनी कीली पर घूमता है तथा अपने सूर्य के चारों ओर घूमता है इसलिए सभी के चुम्बकीय क्षेत्र गतिशील हैं तथा सूर्य किरणों की विद्यमानता में एक दूसरे को काटते रहते है। इसलिए पृथिवी लोक, अन्तरिक्ष लोक तथा द्यौ लोक में विद्युत् आवेश उत्पन्न होता है। जैसे ऋग्वेद में कहा है– "इन्द्र सूर्यं अरोचयत्" विद्युत् सूर्य को प्रकाशित करती है। इसी प्रकार विद्युत् अन्तरिक्ष स्थित बादलों को भी प्रकाशित करती है। नक्षत्रों से विद्युत उत्पन्न होती हैं इसी विधि से डायनमों बनाकर हम भी विद्युत् शक्ति को प्राप्त कर सकते है। इस प्रकार वाजपेय यज्ञ के द्वारा वाज् को प्राप्त कर हम वाजी बन सकते हैं। ये (2 से 6 तक) पाँच वाजपेय ग्रह के भत्ता है। इन यजुर्वेद के मन्त्रों के विज्ञान को जानकर वैज्ञानिक युक्तियो से हम शक्तिशाली बन सकते हैं तथा राष्ट्र को भी शक्तिशाली बना सकते हैं। इस प्रकार विद्युत् शक्ति, अग्निशक्ति, तथा सूर्यशक्ति प्राप्त करना ही वाजपेयी यज्ञ का लक्ष्य है।

253 शिवलोक

कंकर खेड़ा मेरठ – 9927887788

thearyasamaj.org

प्रजातंत्र ही सर्वोत्तम शासन पद्धति

● डॉ. अशोक आर्य

विश्व में विभिन्न शासन पद्धतियाँ चल रही हैं। सब प्रकार की विधियों को अपने अपने देश में उत्तम माना जाता है किन्तु फिर भी विश्व में कहीं शान्ति नहीं है। कहीं न कहीं, किसी न किसी प्रकार इन सब प्रकार की शासन पद्धतियों का विरोध हो रहा है तथा इसमें परिवर्तन के लिए विद्रोह की आवाज़ें, विद्रोह के स्वर आज अनेक देशों में सुनने को मिल रहे हैं। आजकल प्रचलित इन शासन पद्धतियों में एकतंत्र शासन पदधति, सीमित एकतंत्र शासन पद्धति, प्रजातंत्र शासन पद्धति, गणतंत्र शासन पद्धति आदि प्रमुख रूप से मिलती हैं। इन में से किस प्रकार की शासन पद्धति को सर्वोत्तम माना जावे, इसका परीक्षण करने के लिए हमें वेद की शरण में जाना होता है, क्योंकि वेद ही विश्व में एकमात्र ऐसा ग्रन्थ है, जिससे न केवल विश्व की सब समस्याओं का समाधान मिलता है अपितु सत्य पथ के दर्शन भी होते हैं।

जब हम वेद के पन्नों का अवलोकन करते हैं तो हम पाते हैं कि वेद अपने राजा के निर्वाचन का आदेश देता है। इस प्रकार की स्पष्ट घोषणा यजुर्वेद के अध्याय 20 के मन्त्र संख्या 9 में इस प्रकार की गयी है:

" विशी राजा प्रतिष्ठिता "

इसका भाव यह है कि राजा प्रतिष्ठा व स्थिति अर्थात् राजा का सम्मान व उस की सत्ता तब तक ही रह सकती है, जब तक उस राजा की प्रजा उसे पसंद करती है। भाव यह कि प्रजा की इच्छा पर ही राजा का स्वामित्व अथवा उसकी सत्ता निर्भर है। प्रजा की प्रसन्नता राजा के कार्यों पर ही निर्भर करती है। यदि राजा अपनी प्रजा की सुख सुविधाओं को बढ़ाने की व्यवस्था का प्रयत्न करता रहता है तो प्रजा उसको राजा के पद पर बनाए रखती है किन्तु ज्यों ही राजा निरंकुश होता है त्यों ही प्रजा उससे रुष्ट हो जाती है तथा यह प्रजा अपने दुःखों कष्टों से मुक्ति के लिए इस प्रकार के राजा को पद से हटा देती है। इस प्रकार की ही व्यवस्था ऋग्वेद में भी दी गयी है। इस मंत्र में पुरोहित को प्रजा का प्रतिनिधि कहा गया है तथा यह पुरोहित प्रजा का प्रतिनिधि होने के नाते राजा का राज्यभिषेक करता है। इस अवसर पर पुरोहित ऋग्वेद का यह मन्त्र ही उच्चारण करता है। इस मन्त्र के माध्यम से राजा को राज्याभिषेक के समय ही सावधान करता है कि राजन् ! आज मैं तेरा राज्यभिषेक प्रजा के प्रतिनिधि के नाते कर रहा हूँ और तू तब तक ही इस पद पर रहेगा, जब तक प्रजा का तेरे लिए विश्वास बना हुआ है। ज्यों ही प्रजा के विश्वास को तोड़ेगा त्यों ही प्रजा तुझे इस पद से हटा देगी। आओ मन्त्र का अवलोकन करें :–

आ त्वाहार्षमन्तरेधि ध्रुवस्तिष्ठाविचाचलिः।
विशस्त्वा सर्वा वान्छन्तु माँ त्वद्राष्टमधि भ्रशत्।।

ऋग्वेद 10.173.1 ।।

मन्त्र उपदेश कर रहा है कि –

पुरोहित सदा जनता का (प्रजा का) प्रतिनिधि होता है। इसलिए वह प्रजा का ही प्रतिनिधित्व करता है। यह प्राचीन काल से ही प्रथा चली आ रही है कि जब जनता अथवा जब जब प्रजा अपने नए प्रतिनिधियों का राजा स्वरूप, शासक स्वरूप चुनाव करती है, तब तब यह पुरोहित (इसका स्थानापन्न आज के युग में राष्ट्रपति तथा प्रान्तों के लिए राज्यपाल) इन नए चुने गए प्रजा के प्रतिनिधियों, सांसदों अथवा विधायकों और उनके नेता स्वरूप शासक अथवा राजा को सत्ता देते हुए कुछ प्रतिज्ञाएं करवाता है।

इन प्रतिज्ञाओं को करवाने का भाव यह ही होता है कि तुझे प्रजा ने चुनकर भेजा है। प्रजा के मताधिकार के परिणाम स्वरूप तुझे यह सत्ता सौंपी जा रही है। इसलिए ही तुझे हम राजा बनाकर, शासक बनाकर अपने मध्य में ला रहे हैं और तू राजा बनकर, शासक बनकर प्रजा के मध्य में हमारे बीच में आ।

हे राजन् ! तेरा राज्य स्थिर हो

हे राजन्। तेरा राज्य स्थिर हो, किन्तु कैसे? मन्त्र ने यह इच्छा तो प्रकट कर दी कि जनता के चुने गए प्रतिनिधि स्वरूप बने राजा तेरा राज्य स्थिर हो किन्तु यह स्थिरता कैसे आ सकती है? राजा क्या करे कि उसकी सत्ता स्थायी रह सके, उस पर कोई अन्य कब्जा न करे, इसके लिए क्या किया जावे, क्या उपाय किये जावें? इसका एक ही उपाय है कि राजा अपनी प्रजा के सुखों तथा उसकी सपन्नता के उपाय करे और इन उपायों की केवल योजनाएं ही न बनावे अपितु इन योजनाओं को सफलता से क्रियान्वयन भी करे। जब वह अपने इन उपायों का सफलता पूर्वक संपन्न कर लेता है तो वह जन जन के हृदयों का सम्राट् बन जाता है तथा उसकी सत्ता स्थिर हो जाती है।

जब वह राजा किसी प्रकार के भी संकट से विचलित नहीं होता। किसी प्रकार के संकट का वह बिना किसी प्रकार से भयभीत हुए उस संकट का डटकर सामना करता है तथा उस संकट को दूर करने के लिए अपना सब कुछ यहाँ तक कि अपनी जान तक भी देने के लिए तैयार रहता है तो जनता उस पर न्योछावर हो जाती है। उसका मान करती है , उसका आदर करती है, उसका सम्मान करते हुए उसे स्थायित्व, उसे स्थिरता प्रदान करती है। अतः स्पष्ट है कि अपनी सत्ता के स्थायित्व के लिए उसे जनहित के कार्य करने होते हैं तथा यह कार्य करते हुए उसे अपनी जान तक की भी चिंता नहीं होनी चाहिए। यह ही वह गुण है जो राजा के अन्दर होना आवश्यक है।

जब हम मर्यादा पुरुषोत्तम राम जी के जीवन पर और उनकी राज्य व्यवस्था पर प्रकाश डालते हैं अथवा उनके जनहित कार्यों को देखते हैं तो हम पाते हैं कि वह जनहित के लिए पूरी तरह से समर्पित थे। राजा बनने से बहुत पहले ही श्रीराम जी ने जनहित के कार्य आरम्भ कर दिए थे। उनकी इस विशेषता के कारण ही गुरु विश्वामित्र राक्षसों से वनवासियों की रक्षा के लिए अपने साथ ले गये थे तथा उनके प्रयास से उस क्षेत्र के वनों से यह राक्षस या तो मार कर नष्ट कर दिए गए या फिर वह वहां से भाग गए। राम जी के राज्य में उनके इन जन हितैषी कार्यों के कारण तुलसी दास जी को यह लिखने के लिए बाध्य होना पड़ा कि श्री रामचन्द्र के राज्य में वृक्ष माँगने पर फल टपका देते थे, बादल समय पर बरसते थे, किसी को कोई कष्ट और क्लेश नहीं था। पिता के जीवित रहते कभी पुत्र की मृत्यु नहीं होती थी। यहाँ तक कि वह जानते थे कि सीता जी निर्दोष हैं किन्तु फिर भी एक साधारण से नागरिक द्वारा अपने घर के बंद कमरे में भी सीता जी को दोषी कहने पर उसने वनवास के लिए भेज दिया। इस कारण ही आज तक हम पुनः राम राज्य लाने की चर्चा करे हैं।

कर्तव्य से कभी विचलित मत हो

मन्त्र राजा को स्थिर रहने का आदेश देने का साथ ही उसे उपदेश करता है कि हे राजन! तू कर्तव्य से कभी विचलित मत होना। जब जब राजा कर्तव्य से विचलित हुआ है, जब जब राजा ने अपने कर्तव्यों का पालन नहीं किया, तब तब उस राजा का सर्वनाश हुआ है। इतिहास इस बात का साक्षी है। हम जानते हैं कि नंद वंश का समूल नाश होने का कारण था उसका अपने कर्तव्यों से विमुख हो कर भोग विलास में लिप्त होना तथा जनता की चिन्ता न करना।

राजा के लिए जनता की समस्याएँ उसकी अपनी समस्याएँ होती है। इन समस्याओं को दूर करना उसके लिए आवश्यक कर्तव्य होता है। जब तक वह अपने इन कर्तव्यों को भली प्रकार से करता रहता है, तब तक उसे सत्ता का सुख प्राप्त होता है किन्तु ज्यों ही कर्तव्यों की भयंकरता के आगे वह अपने जीवन की, अपने हितों की रक्षा के लिए घुटने टेक देता है, तभी वह जनता की नज़रों से गिर जाता है तथा जनता शीघ्र ही उसे पदच्युत कर देती है, पद से हटा देती है। इसलिए राजा की स्थिरता का सर्वोतम उपाय है अपने कर्तव्यों के प्रति जागरूक रहना तथा उसे पूरा करने में अपना तन, मन और यहाँ तक कि अपने धन तक को भी न्यौछावर कर देना। अन्यथा जनता उसे इस सत्ता पर न रहने देगी।

तेरा वह राज्य कभी छिने नहीं

मन्त्र आगे उपदेश कर रहा है कि हे राजन्। तू एसे उपाय कर, इस प्रकार के कार्य कर कि तेरी यह सत्ता कभी भी तेरे से कोई छीन न सके। अपनी सेना को इतना मजबूत कर कि कोई विदेशी तेरे पर आक्रमण करने की सोच भी न सके। और इसके साथ ही कोई भी तेरे विरुद्ध की आवाज़ न उठा सके।

सारी प्रजाएँ दीर्घायु की कामना करें

हे राजन्। यह जन कल्याण ही है, जिससे तेरी जनता प्रसन्न रह सकती है, तेरा यशोगान कर सकती है, तेरी दीर्घायु की, तेरी सफलता की कामना कर सकती है, तुझे चाहने वाली बन सकती है। जब जनता में, प्रजा में तेरे कल्याण की कामना होगी, जब जनता में तेरे चिरंजीवी होने की इच्छा होगी, जब जनता तेरे रहते हुए स्वयं को सुखी व सुरक्षित अनुभव करेगी, तो वह कभी भी तेरे से राज्य छीन कर किसी दूसरे को देने की इच्छा भी नहीं करेगी।

इस प्रकार मन्त्र में बड़े ही स्पष्ट शब्दों में यह कहा गया है कि राजा प्रजा की इच्छा तक ही इस सत्ता पर है, जब तक प्रजा उससे प्रसन्न है, जब प्रजा कुपित हो गई तो राजा चाहे कितना भी शक्तिशाली हो प्रजा से सत्ता उसे उठा कर दूर फैंक देगी और इस प्रकार की प्रजातांत्रिक व्यवस्था ही एक सफल व्यवस्था है। जब राजा को यह भय होगा कि वह कभी भी सत्ताच्युत हो सकता है तो वह ठीक से राज्य की व्यवस्था करेगा और स्थायी रूप से सत्ता पर रहेगा।

104 शिप्रा अपार्टमेन्ट,
कौशाम्बी–201010–गाजियाबाद
दूरभाष 0120 277 3400,
09718528068

thearyasamaj.org

बढ़ता प्रदूषण फैलता कैन्सर

● डॉ. बिजेन्द्रपाल जिंद

आज जिस प्रकार से जल, वायु, ध्वनि व मृदा प्रदूषण बढ़ता जा रहा है उसकी तीव्र गति से उच्च रक्त चाप, मधुमेह, त्वचा रोग, श्वास रोग एवं कैन्सर जैसे रोगों की वृद्धि हो रही है। इनमें कैन्सर ऐसा रोग है जिसका नाम सुन कर रोगी भयभीत हो जाता है। कैन्सर से मरने वालों की दर में भी वृद्धि हो रही है अभी तक इसका कोई समुचित उपाय खोजा नहीं जा सका है।

आयुर्वेद में यह कर्कटार्बुद के नाम से जाना जाता है। कैन्सर शब्द का अर्थ केकड़ा है तथा कैन्सर ग्रीक भाषा का शब्द है। ग्रीक भाषा में कार्सिनोज को केंकड़ा कहते हैं। आयुर्वेद के ग्रन्थों–चरक, सुश्रुत, वाग्भट, शारङ्गधर संहिता, कश्यप संहिता, भाव प्रकाश, भैषज्य रत्नावली आदि में अर्बुद, दुर्दम्य अर्बुद, मेदो र्बुद, दारुणार्बुद, रक्तार्बुद, त्रिदोषण गुल्म ग्रन्थि आदि नामों से कैन्सर का वर्णन है।

प्राचीन ऋषियों को कैन्सर का ज्ञान था तथा इसका उपचार वे औषध एवं शल्य चिकित्सा द्वारा करते थे। इस हेतु वह अग्नि कर्म दग्ध कर्म, दहन, जलौका, तुम्बी लगाना, पञ्च कर्म चिकित्सा, रक्तमोक्षण, वनौषधि, काष्ठौषधि, रस आदि द्वारा निराकरण करते थे। आज रेडियोथिरेपी, कीमोथिरेपी अग्निदग्ध चिकित्सा विकसित रुप हैं।

अनेक संस्थाओं द्वारा इस क्षेत्र में भरसक प्रयत्न किया जा रहे हैं। प्रदूषण, धूम्रपान, तम्बाकू, गुटखा सुणरी आदि के दुष्प्रभाव के प्रति जागरुकता अभियान भी चलाए जा रहे हैं फिर भी तम्बाकू, गुटखा व धूम्रपान का प्रयोग बदस्तूर वृद्धि पर है। दिन प्रतिदिन कैन्सर रोगियों की दर में वृद्धि हो रही है। वैज्ञानिकों की खोजों के अनुसार विश्व भर में होने वाली बारह मृत्यु में एक कैन्सर से होती है। यूरोप एवं उत्तरी अमेरिका में प्रत्येक चार में से एक मृत्यु कैन्सर से होती है। कैन्सर वृद्धावस्था में ही नहीं अपितु बच्चों में भी होता है। रुस.के. मैडिकल रिसर्च इन्स्टीट्यूट ऑफ साईस के डायरेक्टर डॉ. एन. आई वाइलेगजानिन के अनुसार रूस में तीन करोड़ की जनसंख्या में ढाई लाख को कैन्सर है।

भारत में भी कैन्सर तीव्र गति से बढ़ रहा है इसका कारण, जर्दा, सुपारी, गुटखा तम्बाकू, बीड़ी, सिगरेट, मद्यपान, भांग, गांजा, आदि का अधिक प्रयोग करना है। भारत में कुल कैंन्सर पीड़ितों में 60% गले के कैन्सर से पीड़ित हैं। योस्टन विश्वविद्यालय के शोध कर्ताओं के अनुसार भारत और पूर्व के देशों में मुंह का कैन्सर अधिकांशतः सुपारी खाने से होता है। भारत के पाश्चात्य चिकित्सा वैज्ञानिक डॉ. कैलाश सूरी के अनुसार यदि सुपारी के साथ तम्बाकू का तत्व मिला दिया जाय तो कैन्सर और तेजी से बढ़ता है और मुख में श्वेत धब्बे बन जाते हैं। विकास शील राष्ट्रों में अधिकांशतः पुरुषों में फुफ्फुस का एवं स्त्रियों में स्तन का कैन्सर अधिक होता है। स्त्रियों में 24% गर्भाशय गत कैन्सर देखने में आया है। ईरान, रूस, ब्राजील, युगाण्डा, स्पेन, कोलम्बिया में स्त्रियों में गर्भाशय एवं पुरुषों में अन्न प्रणाली का कैन्सर अधिक पाया गया है।

आधुनिक चिकित्सा प्रणाली का सूत्र है कारण को दूर करना अर्थात् *''रिमूव दि काज़''* रोग के जो कारण हैं उन्हें दूर करना जिससे रोग न होने पाए। आधुनिक चिकित्सा वैज्ञानिकों की लड़ाई कैन्सर के साथ चल रही है। रेडियो थिरेपी कीमोथिरेपी, जहां आरम्भिक स्थिति में कारगर हैं, वहां आज स्टेम सेल्स थिरेपी इस क्षेत्र में कदम रख चुकी है। हार्वर्ड यूनिवर्सिटी में कार्यरत भारतीय मूल के वैज्ञानिक डॉ. खालिद शाह ने खोज की है कि *ग्लायोब्लास्टोमा* नामक *ब्रेन कैन्सर* में जब *टाक्सिन* बनाने वाली *स्टेम सेल्स* का प्रत्यारोपण किया गया तब इन कोशिकाओं ने न केवल *ट्यूमर* की कोशिकाओं को ही नष्ट किया अपितु स्वस्थ कोशिकाओं को भी क्षति पहुँचायी। *टी–सेल्स* बनाने हेतु डोनर से रक्त ले उसमें उपयुक्त परिवर्तन कर कैन्सर सेल्स को नष्ट करने वाली *टी–सेल्स* को बनाया जा सकता है। अनेक भारतीय व विदेशी वैज्ञानिक इस क्षेत्र में शोधरत हैं।

आयुर्वेद संहिताओं में अर्बुद व कर्कटार्बुद के नाम से कैंसर का विस्तृत वर्णन है।

वातेन पित्तेन कफेन–चापि रक्तेन मांसेन च मेदसा वा ।
तज्जायते तस्य च लक्षणानि ग्रन्थे समानाति सदा भवन्ति।।

–सु.नि.11:163

आचार्य सुश्रुत ने प्रकाश किया है कि प्रकुपित हुए वात पित्त कफ आदि दोष शरीर के किसी भी प्रदेश के मांस और रक्त को दूषित करके वर्तुल, स्थिर, मन्द, कष्ट दायक शोफ को उत्पन्न कर देते हैं यह शोफ विशाल आकृति व मूल वाला, देर से मांस की वृद्धि करने वाला तथा नहीं पकने वाला होता है।

गात्र प्रदेश क्वचिदेव दोषाः सम्मूर्छिता मांसमभिप्रदूष्य।
व्रत्त, स्थिर, मन्द रुजं महान्तमनल्पमूलं चिरवृद्ध्पं पाकम्।।
कुर्वन्ति मांसोच्छपमत्यगाधं तदर्बुदं शास्त्रविदोवदन्ति।।

–सु.नि.अ. 11:13

सुश्रुत ने वातादि दोष से होने वाले अर्बुद के अतिरिक्त रक्त से हाने वाले अर्बुद को भी माना है ग्रन्थि जैसे ही इसके लक्षण होते हैं।

सुश्रुत ने शल्य चिकित्सा द्वारा अर्बुद का समूल नाश करने की चिकित्सा का विस्तृत वर्णन किया है उन्होंने अग्निदग्ध करने को अधिक महत्व दिया है। अर्बुद अर्थात कैन्सर को अग्नि दग्ध द्वारा नष्ट किया जाता था, जिसका आधुनिक स्वरूप रेडियो थिरेपी व कीमोथिरेपी है। प्राचीन काल में चिकित्सक अर्थात् शल्य विशेषज्ञ वैद्य कैन्सर को नष्ट करने वाली अनेक दिव्य औषधियों जड़ी बूटियों काष्ठौषधियों के स्वरस व क्वाथ में विशुद्ध लौह ही छड़ को रक्त तप्त कर उचित रूप से डुबाकर अर्बुद को अग्निदग्ध करते थे। इससे कैन्सर का समूल नाश होता था।

कैन्सर को नाश करने के लिए ऋग्वेद आदि ग्रन्थों में हविषा (दूर्वा), ढाक (पलाश), सविता (आक की जड़ की छाल) देवदारु के काण्ड की छाल से चिकित्सा का वर्णन है तथा पलाश, करवीर, निम्ब–बारहमासी,मण्डूकपर्णी, नखी, करिहारी, विषाणिका, गुडमार, कूठ, अतिविषा, ब्रहती, श्यामा, दन्ती, आदि वनौषधियों का इस हेतु प्रयोग करने का वर्णन है। *कौन्सिल फार साइन्टिफिक व इन्डस्ट्रियल रिसर्च* के डॉ. इरफान अली ने बारह मासी *(विन्काशेसिया)* पर उसमें कैन्सर रोधी तत्व की खोज की है।

हमारे आहार विहार व जीवन शैली भी इसके कारण हो सकते हैं। वातावरण का भी प्रभाव होता है। विकासशील देशों में संधी भूत *(कन्सन्ट्रेटिड) फ्राइडफूड,* मैदा से निर्मित डबल रोटी, बिस्किट, चाकलेट, केक, पेस्ट्रिज, केन्डी, पिज्जा, आइसक्रीम व कोल्डड्रिंक्स आदि का प्रयोग अधिक होता है इसलिए वहां आंतों का कैंसर अधिक होता है। काफी का प्रयोग जहां अधिक होता है वहां अग्नाशय का कैन्सर अधिक पाया जाता है। मद्य का सेवन करने वालों में यकृत व आमाशय का कैन्सर अधिक पाया जाता है! मद्य का गले व मुख का कैन्सर होता है विकिरण ों से त्वचा का कैन्सर होता है। डीडीटी व कीटनाशकों के कारण *एप्लास्टिक एनीमिया* व रक्त कैंन्सर अधिक होता है। रसायनों से विटामिन ए तथा बी का क्षय होता है। तीक्ष्ण, ऊष्ण मसालेदार भोजन से आमाशय का कैन्सर होता है।

चावल व दालों पर जो पालिश की जाती है वह सिलिकेट होते हैं उनसे पेट का कैन्सर अधिक होता है। खाद्य पदार्थो की सुरक्षा के लिए जो पदार्थ सोडियम नाइट्रेट प्रयोग करते हैं उससे भी कैंसर होता है।

विश्व के वैज्ञानिकों ने प्रदूषण को भी इसका कारण माना है। दौड़ते वाहन उनमें पेट्रोल, डीजल का प्रयोग व उनका धुआं, कल–कारखानों से निकलने वाले रसायन, मृदा व वायुमण्डल को प्रदूषित कर रहे हैं वायु मण्डल में कारखानों से निकलने वाली गैस *नाइट्रोजन आक्साइड, सल्फर डाइआक्साइड, कार्बन मोनोक्साइड,* आदि जहरीली गैसों से मानव शरीर व्याधि ग्रस्त हो रहा है दिन प्रतिदिन फुफ्फुस मस्तिष्क कैन्सर बढ़ रहे हैं। धूम्रपान करने वालों में फुफ्फुस का कैंसर दिनोदिन बढ़ रहा है। प्रदूषण से ओजोन पर्त में छेद हो कर पराबैगनी किरणें पृथ्वी पर सीधे आकर त्वचा कैंसर उत्पन्न करती हैं। कारखानों व बढ़ती जन संख्या से नदियों का पानी प्रदूषित हो रहा है पृथ्वी के अन्दर भी रसायन पहुँच रहे हैं। जिनसे शान्त एकान्त स्थानों ग्रामों में भी कैंसर फैल रहा है।

लन्दन स्थित आक्सफोर्ड विश्वविद्यालय के वैज्ञानिक व वरेण्य केन्सर विशेषज्ञों के पत्र व्यवहार द्वारा बताया गया कि अन्न–नलिका व आन्त्र के कैन्सर पीड़ितों में 7–15% कैन्सर जल प्रदूषण से होते हैं।

इसी प्रकार ध्वनि प्रदूषण भी कैंसर का कारण हो सकता है। उच्च फ्रिक्वैंसी की तेज़ आवाज़ों से भी इनसे सम्बन्धित अंगों–कर्ण आदि का कैंसर हो सकता है। द्वितीय विश्वयुद्ध में जापान के हिरोशिमा में परमाणु बम छोड़ा गया था उस समय असंख्य लोगों को वहां कैंसर हुआ।

कहने का तात्पर्य यह है कि आज यदि कैन्सर जैसी व्याधियों से बचना है तो हमें अपना पर्यावरण सुन्दर बनाना होगा। आज वन व पर्वतों का कटान लगातार चल रहा है, कारखानों से दिन रात जहर उगला जा रहा है, रासायनिक उर्वरक व कीटनाशकों से कृषि भी विकृत हो चुकी है, खाद्य पदार्थों में मिलावट के साथ–साथ मानव की जीवनचर्या तनाव पूर्ण होती जा रही है। हम प्राकृतिक साधनों का प्रयोग छोड़ आराम दायक मादक कृत्रिम खाद्य, पेय, निवास, यातायात, वस्त्र और सौन्दर्य साधनों का प्रयोग कर रहे हैं।

जीवन कृत्रिम बन कर रह गया है, इसलिए ऐसे भयानक रोगों का जन्म हो रहा है। वृक्षारोपण करें। घरों, आंगन, दीवारों, छतों पर औषधीय पौधे लताऐं तथा पौधे लगायें सड़कों, नगर, ग्रामों में वट, पीपल, कनेर, नीम, गिलास, जामुन, आम, अशोक, ढाक और पलाश के वृक्ष लगायें।

अग्निहोत्र से वायु शुद्ध होती है। धूप, घृत, गुग्गल व सामग्री से अग्निहोत्र करें। कारखानों के स्थान पर पशुपालन गौ, बकरी, भेड़ आदि के पालन को बढ़ावें। यदि कैंसर जैसी बीमारी से छुटकारा पाना है तो आयुर्वेद की ओर चलना होगा।

गली नं.2 चन्द लोक कालोनी
खुर्जा–203131

thearyasamaj.org

वेद-प्रश्नोत्तरी

● धर्मपाल कपूर

वेदों के अध्ययन, अनुशीलन, अनुसंधान, अन्वेषण, अभ्यास, अनुभव, निरीक्षण, समीक्षण, परीक्षण से प्रतीत होता है जैसे नदियों में गंगा, वृक्षों में पीपल, पुरियों में काशी, तीर्थों में पुष्कर, दही में मक्खन और पशुओं में गाय सर्वश्रेष्ठ है। उसी प्रकार वेदों को भी संसार के विभिन्न विद्वानों एवं गिन्नीज़ बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड ने संसार के पुस्तकालय में प्राचीनतम एवं सर्वश्रेष्ठ ग्रंथ घोषित किया है। अतः संयुक्त राष्ट्र संघ (U.N.O.) के अधिकारियों ने विवेकपूर्ण निर्णय लेकर चारों वेदों को भारत से मंगवाकर अपने पुस्तकालय में मानव कल्याण के प्रथम ज्ञान-ग्रंथ के रूप में मान्यता के साथ सुसज्जित कराया है। इसके अतिरिक्त अमेरिकी संसद में भी गायत्रीमंत्र का उच्चारण और शांतिपाठ की ध्वनि सारे संसार को सुनाई दी है। क्योंकि ये दोनों मंत्र सारे संसार के कल्याण की कामना, शांति तथा समृद्धि के सूचक हैं और इनमें किसी विशेष सम्प्रदाय का वर्णन नहीं है। जैसाकि महर्षि दयानन्द ने कहा था-

वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है जो इस पर खरा उतरे ले लो। शेष सब छोड़ दो। व्यर्थ के व्यामोह में न पड़ो।

वस्तुतः संसार का सारा ज्ञान सूक्ष्म रूप में वेदों में निहित है। वेद ही वह गंगोत्री है जहाँ से भारतीय संस्कृति की गंगा प्रवाहित होती है। वेद विविध बहुमूल्य विचार रूप रत्नों के रत्नाकर हैं। वेद ईश्वरीय ज्ञान है और मानव जाति का संविधान हैं। संसार में जो कुछ भी दृष्टिगोचर हो रहा है वह सब क्षणभंगुर एवं नाशवान् है। केवल परमात्मा, आत्मा, प्रकृति और वेदज्ञान ही अनादि हैं क्योंकि प्रलय के उपरांत भी वेदज्ञान सूक्ष्म रूप से परमात्मा में रहता हैं अतः वेद ईश्वरीयज्ञान, शाश्वत, अजर एवं अमर है। इन में अनार्ष ग्रन्थों की भाँति मिलावट भी नहीं है। वेद विश्व धर्म है। अतः अज्ञान की काल रात्रि वेद सूर्य की पावन रश्मियों से ही मिटेगी। संसार की जलती हुई सम्पूर्ण समस्याओं का एक ही समाधान है। वह है वेदचार एवं वेदप्रचार। इसलिए स्वामी विद्यानंद सरस्वती जी ने सत्य ही लिखा है-

वेद आर्य समाज की आत्मा है, उसके निकल जाने पर उसकी मृत्यु अवश्यम्भावी है।

-भूमिका भास्कर भाग-1 पृ. 93

इसी प्रकार पारसी फर्दून दादाचान लिखते हैं :-

The Veda is a book of knowledge and wisdom comprising the book of Religion, the book of prayers, the book of morals and so on. The word 'Veda' means Wit, Wisdom, knowledge and truly the Veda's is condensed wit, wisdon and acknowledge.

-Philosophy of Zoroastrainism and comparative study of Religions p. 100.

वेद ज्ञान की पुस्तक है। जिसमें प्रकृति, धर्म, प्रार्थना, सदाचार आदि विषयक पुस्तकें सम्मिलित हैं। वेद का अर्थ ज्ञान है। वास्तव में, वेद में सारे ज्ञान-विज्ञान का तत्व भरा हुआ है। अतः एक हिन्दी कवि ने वेदों के विषय में कितना सुन्दर लिखा है :-

सारी सत्य विद्याओं का एक वेद भण्डार है।
पूर्ण ईश्वर ने दिया नियमों का इसमें सार है।।
पूर्णतया परमात्मा का पूर्ण इसमें विज्ञान है।।
वेद प्रभु के आदेशों का सुन्दर मंगल गान है।
वेद ही ईश्वर की वाणी वेद विमल विज्ञान है।।
सुख शांति को पाने का केवल यही विधान है।
वेद के ही ज्ञान से संसार का कल्याण है।।

प्रश्न 1. चारों वेदों के क्या नाम हैं और इनका विषय क्या-क्या है?

उत्तर :- ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद और अथर्ववेद चार वेद हैं। ऋग्वेद ज्ञानकाण्ड है। यजुर्वेद कर्मकाण्ड है। सामवेद उपासना काण्ड है और अथर्ववेद विज्ञान काण्ड है। इसलिए ऋग्वेद मस्तिष्क का वेद है। यजुर्वेद हाथों का वेद है। सामवेद हृदय का वेद है और अथर्ववेद उदर का वेद है। स्वामी विद्यानंद "विदेह" लिखते हैं :-

ऋग्वेद ज्ञानवेद, यजुर्वेद साधनावेद, सामवेद गीतिवेद और अथर्ववेद योगवेद है।

-विदेहवाणी (दर्शन के अधिकारी पृ. 105)

प्रश्न 2. चारों वेदों के मंत्रों की संख्या कितनी है और सर्वप्रथम किन भारतीय विद्वानों ने क्रमशः वेदों का अनुवाद हिन्दी एवं अंग्रेज़ी भाषाओं में किया?

उत्तर :- चारों वेदों के मंत्रों की संख्या के विषय में विभिन्न विचार हैं। इसका मुख्य कारण यह है कि किसी विद्वान ने चार मंत्रों को एक ही मंत्र माना और किसी विद्वान ने चार मंत्र माने। अतः मंत्रों की गणना के कारण ही मंत्रों की संख्या में अंतर पड़ गया। परन्तु वेदों में कोई भी विद्वान मिलावट नहीं कर सका। महर्षि दयानन्द के मतानुसार वेदों में मंत्रों की संख्या का विवरण निम्नलिखित है:-

1.	ऋग्वेद	10,589 मंत्र।
2.	यजुर्वेद	1,975 मंत्र।
3.	सामवेद	1,875 मंत्र।
4.	अथर्ववेद	5,977 मंत्र।
	कुल जोड़	20416 मंत्र।

अतः महर्षि दयानंद का मत सर्वमान्य है। महर्षि दयानंद ने ही सर्वप्रथम वेदों का अनुवाद हिन्दी भाष्य में किया था। परंतु दुर्भाग्यवश वे केवल यजुर्वेद के 1975 और ऋग्वेद के 5,649 मंत्रों (6 मंडल, 62 सूक्त, 2 मंत्र) तक ही वेदों का भाष्य कर पाये थे। इस प्रकार उन्होंने 20,416 मंत्रों में से 7,624 मंत्रों का ही हिन्दी अनुवाद किया था और शेष 12,792 वेद मंत्रों का अनुवाद वे अकाल मृत्यु, के कारण नहीं कर पाये। शेष मंत्रों का अनुवाद अन्य विद्वानों ने किया। इसी प्रकार सर्वप्रथम डॉ. सत्यप्रकाश जी ने विदेशी लेखक ग्रिफ़िथ की भाँति अंग्रेजी में चारों वेदों का 23 विभिन्न खंडों में अनुवाद किया था।

प्रश्न 3. वेदों का सर्वश्रेष्ठ मंत्र कौन-सा है और क्यों?

उत्तर :- गायत्री मंत्र वेदों का सर्वश्रेष्ठ मंत्र और इसको वेदों का सार कहा जाता है जोकि इस प्रकार है।

ओ३म भूर्भुवः स्वः।
तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गोदेवस्य धीमहि।
धियो यो नः प्रचोदयात्।। -यजुर्वेद 36.3

हे प्रभु! आप सर्वरक्षक, प्राणाधार, सुखस्वरूप, दुःखनाशक, सत्‌चित आनंदस्वरूप हैं। आप ही सृष्टि के उत्पादक, पालक, संहारक, वैदज्ञानदाता एवं कर्मफल दाता है। हम आपके प्रेरणादायक, शुद्धस्वरूप, वरणीय, परमपवित्र, दिव्यस्वरूप, का हृदय मंदिर में ध्यान करते हैं। आप हमारी बुद्धियों को कृपया श्रेष्ठ मार्ग की ओर प्रेरित कीजिए।

पद्यानुवाद-

तूने हमें उत्पन्न किया पालन कर रहा है तू।
तुमसे ही पाते प्राण हम दुःखियों के कष्ट हरता है तू ।।
तेरा महान् तेज है छाया हो सभी स्थान।
सृष्टि की वस्तु वस्तु में तू हजो रहा है विद्यमान्।।
तेरा ही धरते ध्यान हम माँगते तेरी दया।
ईश्वर हमारी बुद्धि को श्रेष्ठ मार्ग पर चला।।

अब गायत्री मंत्र पर उर्दू नज़्म पेश की जाती है:-

पैदा किया है जिसने हमें कायनात में।
करता है परवरिश जो हमारी हयात में।।
उससे ही इस जहाँ में कामयाबें-जिन्दगी।
करता है दूर मुश्किलें देहर में सबकी।।
दुनियाँ के ज़र्रे-जर्रे में जिसका ज़हूर है।
हर आँख का वो नूर दिल का सुरूर है।
उसके ही नूर से चमक है अफ़ताब में।
ताबिदेगी है अयाँ महाताब में।।
आदल है वो रहीम मंमावाये नूर है।
जलतकदा में तीरंगी से कोसों दूर है।।
माता है मेहरबान कि पितरेशरीफ़ है।
वो आपदों का सच्चा रफ़ीक है।।
हम मांगते हैं उसके दर पे सिर्फ यह दुआ।
अक्ले-सलीम वो करे हमें सदा अता।।
दुनियाँ में करें जो भी कोई नेक काम हो।
निष्काम हो दो काम रफाय-आम हो।।

-बलदेव सिंह "अजीज"

अब प्रश्न उठता है कि गायत्री मंत्र को वेदों का सर्वश्रेष्ठ मंत्र एव सार क्यों कहा जाता है। इसका कारण यह है कि वेदों में केवल एक ही यह मंत्र है जिसमें ईश्वर की स्तुति, प्रार्थना और उपासना तीनों का एक साथ समन्वय हुआ है। स्तुति का अर्थ है ईश्वर के गुणों का चिन्तन करना ताकि उसमें मन लगा रहे। उपासना का अर्थ है इश्वर में देर तक मन लगाकर ध्यान लगाना। प्रार्थना का अर्थ है ईश्वर का धन्यवाद करना और उसके मिलन की याचना करना ताकि अभिमान न रहे। क्योंकि स्तुति से प्रेम उत्पन्न होता है उपासना से भय का नाश होता है और प्रार्थना से अभिमान का नाश होता है। जैसे "भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं" में ईश्वर की स्तुति और "भर्गो देवस्य धीमहि" ईश्वर की उपासना और "धियो यो नः प्रयोदयात्" में ईश्वर की प्रार्थना की गई है। इस प्रकार भक्ति के तीनों अंगों के लिये चारों वेदों में अकेला यही एक मंत्र है। वस्तुतः जैसे फूलों का सार मधु है, दूध का सार घी है, यज्ञ का सार सुगंधि है मानव जीवन का सार धर्म है उसी प्रकार वेदों का सार गायत्री मंत्र है। वस्तुतः गायत्री, गीता, गंगा, गाय और गुरु शुद्ध भारतीय संस्कृति के आधारभूत स्तंभ है।

प्रश्न 4. क्या वेदों का विभाजन महर्षि वेद व्यास ने किया था?

उत्तर :- नहीं। जैसे अथर्ववेद में लिखा है -

ऋचः सामानि च्छन्दांसि पुराणं यजुषा सह।
उच्छिष्टाज्जज्ञिरे सर्वे दिवि देवा दिविश्रितः।।

-अथर्व 11.7.24

प्रस्तुत मंत्र में चारों वेदों के नाम एक साथ आये हैं। वे सिद्ध करते हैं कि वेदों का ज्ञान एक साथ प्राप्त हुआ न कि क्रमिक व्यवस्था से। इससे यह स्पष्ट होत है कि वेदों का विभाजन महर्षि वेदव्यास ने नहीं किया अपितु प्रभु द्वारा ही किया गया था। जैसे महर्षि दयानंद ने ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका में भी लिखा है -

जो सर्वशक्तिमान् परमेश्वर है उससे ही ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद और अथर्ववेद ये चारों उत्पन्न हुए हैं।

प्रश्न 5.(1) यज्ञ की आत्मा क्या है?
(2) यज्ञ के प्राण क्या है?
(3) यज्ञ का सार है?
(4) यज्ञ के विभिन्न देवों का मुख क्या है?
(5) यज्ञ की सफलता क्या है?

उत्तर :-(1) यज्ञ की आत्मा स्वाहा है। इसका भाव है कि यथाशक्ति हर प्रकार का त्याग। स्वाहा शब्द स्व+आ+हा शब्दों से बना है। स्व का अर्थ है स्वयं, आ का अर्थ है सम्पूर्ण और हा का अर्थ है समर्पण । मैं तन, मन, धन से सम्पूर्ण समर्पण करता हूँ। यज्ञ में इस शब्द का बार-बार प्रयोग किया गया। आज आध्यात्मिक जगत् में भी समर्पण का अभाव है और

शेष पृष्ठ 11 पर

पत्र/कविता

बल्लभ भाई पटैल से नेता बनो महान

आज बताते हैं तुम्हें, नेता की पहचान।
जिसमें ये गुण हैं उसे, नेता लेना मान।।
नेता लेना मान, सत्य का जो अनुरागी।
देश भक्त ईमानदारी, तपधारी, त्यागी।।
वीर, साहसी, निडर, निबल निर्धन का रक्षक।
देश भक्त, गौ भक्त, गुणी वह नेता लायक।।

बल्लभ भाई पटैल थे, ईश्वर भक्त महान।
देश भक्त धर्मात्मा, भारत की थे शान।।
भारत की थे शान, तपस्वी परोपकारी।
नेता थे गुणवान, साहसी, कर्मठ भारी।।
मानवता के पुंज, दया के थे वे सागर।
उनके यश के गीत, रहे हैं गा नारी–नर।।

प्यारे भारत देश में ,था गोरों का राज।
पापी करते थे जुल्म, था तब दुखी समाज।।
था तब दुखी समाज, गए थे बढ़ अन्याई।
गौ हत्या नित यहाँ, कराते थे दुःख दाई।।
तिलक, गोखले, विपिन पाल, तब आगे आए।
स्वामी श्रद्धानन्द, लाजपत ना दहलाए।।

बल्लभ भाई पटेल ने, नहीं लगाई देर।
स्वतंत्रता संग्राम में निर्भय कूदा शेर।।
निर्भय कूदा शेर, किसी का खौफ न खाया।
गरजा शेर समान, विधर्मी राज हिलाया।।
कांप गए अंग्रेज, नहीं रण में टिक पाए।
भाग गए इंगलैंड, भारती सब हर्षाए।।

फिर सरदार पटैल ने , किया गजब का काम।
तीन सौ सड़सठ रियास्तें, करदीं एक तमाम।।
करदीं एक तमाम, देश मजबूत बनाया।
ऐसा नेता यहां, न अब तक कोई आया।।
अगर जवाहर लाल, नहीं रोड़ा अटकाता।
काशमीर का रोग, उसी दम ही मिट जाता।।
नरेन्द्र मोदी जी सुनो, आप लगाकर ध्यान।
बल्लभ भाई पटैल से, नेता बनो महान्।।
नेता बनो महान, न दुष्टों से दहलाओ।
पापी पाकिस्तान, चीन का दम्भ मिटाओ
भारत मां की शान, बढ़ाओ, प्यारे नेता।
तरुणाई का जोश, दिखाओ, प्यारे नेता।।

पं नन्दलाल निर्भय,
आर्य सदन, बहीन, जनपद पलवल (हरियाणा)
चलभाष क्रमांक 9813845774

एक जिल्द में कब छपेगा संपूर्ण सुगम वेद

आज आर्य समाज के लगभग सारे प्रधिकारी गण अपनी–अपनी छोटी–छोटी पत्रिकाओं को जैसे–तैसे भी निकालते रहने को ही अपने जीवन की बहादुरी पूर्ण परमोद्देश्य समझ बैठे हैं। वेद, शास्त्र, सत्यार्थ प्रकाश, विशुद्ध मनुस्मृति–रामायण–महाभारत जैस आर्ष–ग्रंथों का सारा निचोड़ उन्हीं पत्रिकाओं में ही पढ़ते रहने की सफलता पूर्वक प्रेरणा भी देते रहते हैं।

फलतः इन पत्रिकाओं के तड़प–झड़प भरे झमेलों से दूर जाकर कोई वेद–जिज्ञासु किसी पुस्तकालय में झांकता भी है तो उसे वेद ग्रंथ समाधिस्थ या सुप्तावस्था में ही मिलते हैं। जिन्हें जगाना भी असमंजस भरा होता है।

कारण कि ये अकेले नहीं होते। बड़े–बड़े कई खंडों में, कई जिल्दों में होना ही इनका बड़प्पन माना जा रहा है। इसी का दुष्परिणाम है कि कुरान और बाइबल के सामने हमारा वेद अपने धर्मावलंबियों से भी दूर हो चुका है।

चारो वेदों को यदि एक जिल्द में सरल महीन अक्षर में पुस्तकाकार छापा जाये तो सोलह सौ पृष्ठों में प्लास्टिक के कवर सहित एक किलो वजन में 500 रु. लागत में सस्ता के साथ–साथ यात्रा में भी साथ लेकर चलने योग्य हो जायेगा।

इसी तरह छहों शास्त्र, अप्रक्षिप्त मनुस्मृति, अप्रक्षिप्रप्त रामायण, अप्रक्षिप्त महाभारत को भी प्रामाणिकता से छापने की उम्मीद सिर्फ आर्य–प्रकाशनों से ही आज का जागरूक हिंदू समाज कर रहा है।

आर्य प्रहलाद गिरि
मुख्य पुजारी–शिव मंदिर, निंगा
आसनसोल (पंजाब)–713370
09735132360

****

श्रद्धावान लभते ज्ञानम्

श्रद्धा से ही ज्ञान की प्राप्ति होती है, यह शास्त्र का वचन है। परन्तु यह जानना भी आवश्यक है कि श्रद्धा किसे कहते है? श्रत् शब्द का अर्थ सत्य होता है। इसी से श्रद्धा शब्द बना है, अर्थात् सत्य को धारण करना। आर्य समाज के नियमों में सत्य को कई बार प्रयोग किया गया है। महर्षि दयानन्द जी ने ऐसा तो कई स्थानों पर कहा था कि सत्य के ग्रहण करने तथा असत्य को त्यागने में सर्वदा उद्यत रहना चाहिये। अर्थात् सत्य को जानना, मानना और उसी के अनुसार कार्य करना ही श्रेयस्कर है। अब यह कैसे पता चले कि सत्य क्या है? धर्म क्या है? इस बारे में मनुस्मृति में यह श्लोक आया है–

'श्रुति स्मृतिः सदाचारः स्वस्थ्य च प्रियमात्मनः एतच्चतुर्विधमाहुः साक्षाद्धर्मस्य लक्षणम्'

अर्थात् वेद, स्मृति, सत् पुरुषों का आचरण और अपनी आत्मा को जो प्रिय लगे वही धर्म है उसी के अनुकूल आचरण करना चाहिये।

इसलिये वैदिक सिंद्धातानुकूल आचरण करण ही श्रद्धा है अर्थात् प्रातः सायं सन्ध्या करना ,सत्संग में जाना, स्वाध्याय करना, निराकार ईश्वर की स्तुति प्रार्थना और उपासना करना, योगाभ्यास अर्थात् श्रद्धापूर्वक इन सब धार्मिक कृत्यो में भाग लेना सब आर्यों के लिये आवश्यक है। मत मतान्तर के लोग अपने अपने मतों के बड़े पक्के हैं परन्तु उन में अंन्ध विश्वास बहुत है वह बिना विचारे ही अपने–अपने गुरुओं के कहने अनुसार कार्य करते रहते हैं इसे अन्धश्रद्धा भी कहते हैं। इस से कई प्रकार की हानियां भी हो जाती हैं इसलिये सब मनुष्यों को बुद्धि पूर्वक सोच विचार कर कार्य करने चाहियें।

''सत्यमेव जयते नानृतम्'' – सत्य की विजय होती है झूठ की नही। यह हमेशा याद रखना चाहिये। झूठ बहुत दिन तक नहीं चलता। आर्य समाज के लोग हमेश सत्य बात ही कहते थे। कई न्यायालयों ने भी यह माना था। गुरुकुल कांगड़ी हरिद्वार के संस्थापक महात्मा मुन्शीराम् जी ने संयासी बन कर अपना नाम श्रद्धानन्द रखा तथा श्रद्धा पूर्वक राजनीतिक, सामाजिक क्षेत्रों में आर्य समाज का नेतृत्व किया था और धर्म पर बलिदान हो गये उनके बाद आर्य समाज का कोई नेता पैदा नही हुआ।

अश्विनी कुमार पाठक
वी 4/ 256 सी, केशव पुरम्, दिल्ली

****

thearyasamaj.org

☞ पृष्ठ 09 का शेष

वेद–प्रश्नोत्तरी

वहाँ भी सौदेबाजी अधिक है।

(2) यज्ञ के प्राण इदन्न मम है। यह मेरे लिए नहीं है। यज्ञ में इस शब्द का बार–बार प्रयोग किया गया है।

(3) यज्ञ का सार सुगंधि है जिससे चतुर्दिक सुगंधि फैले वही यज्ञ है जिससे दुर्गंध फैले वह यज्ञ नहीं है।

(4) यज्ञ के विभिन्न देवों का मुख अग्नि है।

(5) यज्ञ की सफलता दान है।

प्रश्न 6. वेदानुसार विधि–निषेध कौन–कौन से है?

उत्तर :– वेदानुसार निम्नलिखित 7 विधि–निषेध हैं।

विधि (मर्यादाएं)	निषेध (अमर्यादाएं)
1. सुविचार	1. चोरी करना
2. सुदुष्टि	2. व्यभिचार करना
3. सुश्रुति	3. शराब पीना
4. सुभावना	4. गर्भ में बच्चे को मारना
5. सुभाषण	5. विद्वानों की हत्या करना
6. संभक्षण	6. बुरे कामों को बार–बार करना
7. सुस्पर्श	7. पाप करके झूठ बोलना

प्रश्न 7. जगत् निर्माण के तीन कारक कौन–कौन से हैं?

उत्तर :– जगत् निर्माण के निम्नलिखित तीन कारक हैं–

1. निमित्त कारक (Efficient Cause) –

यह वह कारण होता है जिसके बनाने से कुछ बने, न बनाने से न बने। अतः इसका भाव यह स्पष्ट है कि जगत् को बनाने वाला परमात्मा जगत् निर्माता होने के कारण ही इसका निमित्त कारण है। जिस प्रकार कुम्हार के घड़े को बनाने वाला होने के कारण घड़े का निमित्त कारण है।

2. साधारण कारण (Resultant Cause) –

यह वह कारण होता है जो बनाने में साधन हो। इसका भाव यह है कि जो बनाने में साधन एवं प्रयोजन हो। कुम्हार ने ग्राहकों के लिए घड़ा बनाया है। अतः ये दिशा, आकाश, प्रकाश, चाक आदि घड़े के साधारण कारण हैं।

3. उपादान कारण (Material Cause) –

उपादान कारक इसको कहते हैं जिसके बिना कुछ न बने। इसका भाव यह है कि जिसका ग्रहण ही उत्पन्न होने और कुछ बनाया जाये और जिसके बिना कुछ न हो। जैसे परमात्मा ने प्रकृति से जगत् को बनाया है अतः प्रकृति जगत् का उपादान कारण है।

अतः जगत् निर्माण के तीन कारणों से ही वेदों का त्रैतवाद का सिद्धांत यथार्थवादी है जिसके अनुसार परमात्मा, आत्मा एवं प्रकृति पृथक्–पृथक सत्ताएं हैं जिनमें परमात्मा साक्षी है आत्मा पक्षी है और प्रकृति वृक्ष है। वस्तुतः आत्मा साधक है, प्रकृति साधन है और परमात्मा आनंदस्वरूप है। यजुर्वेद का 40वां अध्याय एवं ईशावस्योपनिषद् में इसी सिद्धांत का वर्णन है। जैसे :–

जिसने वस्तुओं को बनाया वह ईश्वर है।
जिससे वस्तुओं को बनाया यह प्रकृति है।
जिसके लिए बनाया वह जीव है।

–आचार्य चन्द्रशेखर

प्रत्येक 8. वेदानुसार सृष्टि का काल कितना और सृष्टि सृजन को कितने वर्ष व्यतीत हो चुके हैं?

उत्तर :– वेदानुसार सृष्टि का काल 4 अरब 32 करोड़ (4,32,00,00,000) वर्ष हैं और सृष्टि सृजन हुए 1,96,08,53,113 वर्ष हो चुके हैं। इस प्रकार अभी 2,35,91,46,887 वर्ष प्रलय होने का समय अभी शेष है।

इसी प्रकार विभिन्न वैज्ञानिकों एवं इतिहासकारों ने भी वेदों की भाँति पृथ्वी की आयु लगभग 2 अरब वर्ष मानी है जिसका विवरण निम्नलिखित है :–

1. The age of the earth is about two thousand million years.

-Dr. William Rose
(outline of Modern knowledge P-152)

पृथ्वी की आयु लगभग 2 अरब वर्ष है।

2. Our globe must be about two thousand million years old and can in no case be much older.

-Lecomate Dunouy (Human Destiny P-48)

हमारी पृथ्वी लगभग 2 अरब पुरानी है और किसी भी अवस्था में इससे अधिक पुरानी नहीं।

3. Astronomers and mathematicians give us 200 million years of the age of the earth as a body separate from the sun.

-H.G. Well (outline of History P-19)

ज्योतिषी एवं गतितज्ञ सूर्य से पृथक् हुई की आयु लगभग 2 अरब वर्ष बताते हैं।

प्रश्न 9. आत्मा को मोक्ष काल कितने समय होता है?

उत्तर – सृष्टि का काल 4 अरब 32 करोड़ (4,32,00,00,000) वर्ष का है। यह ब्रह्मा का एक दिन है और इतने वर्षों की ब्रह्मा रात्रि होती है। इस प्रकार आत्मा का मोक्षकाल 4,32,00,00,000×2×360×100=31 नील, 10 अरब, 40 अरब वर्ष (31,10,40,00,00,00,000) तक आत्मा मुक्ति में रहती है। आत्मा का मोक्ष काल इस प्रकार समझा जा सकता है– 4,32,00,00,000×2×36000 अर्थात् एक बार सृष्टि की उत्पत्ति एवं प्रलय में 8 अरब 64 करोड़ वर्ष समय लगता है इस प्रकार 36 हजार बार सृष्टि की उत्पत्ति एवं प्रलय में जितना समय लगता है। वह आत्मा का मोक्ष काल होता है।

प्रश्न 10. कः स्विदेकाकी चरति काऽउ स्विज्जायते पुनः।
किꣳस्विद्धिमस्य भेषजं किम्वावपनं महत्।

–यजुर्वेद 23.46

(1) कौन अकेला चलता है?
(2) कौन बार–बार उत्पन्न होता है?
(3) हिम की औषधि क्या है?
(4) बीज बोने एवं काटने का बहुत बड़ा स्थान कौन–सा है?

उत्तर :– सूर्यऽएकाकी चरति, चन्द्रमा जायते पुनः।
अग्निर्हिमस्य भेषजं भूमिरावपनं महत्।।

–यजुर्वेद 23.46

(1) सूर्य अकेला चलता है।
(2) चन्द्रमा बार–बार उत्पन्न होता है।
(3) आग हिम की औषधि है।
(4) भूमि बीज बोने और काटने का बहुत बड़ा स्थान है।

अतः एक हिन्दी कवि ने वेदों के विषय में कितना सुन्दर लिखा है–

पूर्ण वह परमात्मा सत्य ज्ञान का भण्डार है।
पूर्ण वेदों में किया सत्य धर्म का विस्तार है।।
जैसे दो और दो को मिलाने से चार बनता है।
इसी तरह वैदिक धर्म का सत्य ही आधार है।।

1135/11 पंचकूला, हरियाणा
फोन नं. 0172–2567845

डी.ए.वी. वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय कलानौर, हरियाणा में बलिदान दिवस मनाया गया

डी.ए.वी. वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय कलानौर, हरियाणा के प्रांगण में स्वामी श्रद्धानन्द जी के बलिदान दिवस पर पंच कुण्डीय यज्ञ का आयोजन किया गया। अभिभावकगणों, अध्यापकवर्ग, विद्यार्थियों को संबोधित करते हुए अपने मुख्य संबोधन में स्कूल की प्राचार्या विमला जुनेजा जी ने युवा पीढ़ी को आर्य समाज के नियमों का अनुसरण करने का आह्वान किया। उन्होंने कहा कि यदि आर्य समाज के महापुरुषों द्वारा प्रशस्त किए गए मार्ग का अनुसरण करते हुए युवा पीढ़ी अपने भविष्य को लक्षित करे, तो सफलता निश्चित ही उनके कदम चूमेगी।

इस पर्व पर यज्ञ द्वारा विश्वकल्याण की कामना की गई। यजमान सर्व श्री गुलशन दुआ, पवन लैलपुरिया, दिनेश सपड़ा, डॉ. यशपाल, कुलदीप, श्री मती संतोष सेतिया, श्री मती गुलाटी, श्री मती शर्मा एवं अभिभावक गणों द्वारा यज्ञ में आहुति डालकर यज्ञ को सम्पन्न किया गया। हवन का यह कार्य विद्यार्थियों एवं अध्यापकवर्ग के सहयोग द्वारा सम्पन्न किया गया।

यज्ञ के उपरांत जरूरतमंदों को कंबल वितरण किए गए एवं ऋषि लंगर का भी आयोजन किया गया।

thearyasamaj.org

Delhi Postal R. No. D.L. (ND)-11/6066/2015-17
अग्रिम अदायगी के बिना भेजने का लाइसैंस नं. U(C)-103/2015-17
POSTED AT N.D.P.S.O. ON 21-22/1/2015
रजिस्ट्रेशन नं. आर० एन० आई० 39/57

वैदिक मोहन आश्रम में लगा वर्ष का प्रथम वैदिक चेतना शिविर

हरिद्वार में पवित्र एवं पावन ऐतिहासिक स्थली वैदिक मोहन आश्रम में वर्ष पर्यन्त वैदिक चेतना एवं चरित्र निर्माण शिविरों का आयोजन होता रहता है लेकिन इस वर्ष यह परम सौभाग्य डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल, यमुनानगर के उन्तीस छात्रों एवं चार अध्यापकों नववर्ष की पूर्व संध्या पर हवन–यज्ञ से नववर्ष का शुभारम्भ करने तथा उस स्थान पर पांच दिनों तक निरन्तर यज्ञ के साथ–साथ अनेक विद्वानों के उपदेश सुनकर समाज में आदर्श व्यक्ति की भूमिका निभाते हुए अपने जीवन को सार्थक बनाने का दृढ़ संकल्प लिया।

शिविर में भाग लेते हुए सभी विद्यार्थियों एवं अध्यापकों ने श्री धनी राम, प्रबन्धक वैदिक मोहन आश्रम एवं डी.ए.वी गान के रचियता श्री अजय ठाकुर जी द्वारा वैदिक मंत्रो के ऊपर बनाए गए भाव गीतों का भरपूर आनन्द लिया। धर्मोपदेश सम्बोधनों के साथ–साथ शिविर में क्या ईश्वर है? तथा वैदिक शिविरों का आयोजन होना चरित्र निर्माण के लिए अत्यन्त लाभदायक है आदि प्रतियोगिताओं का आयोजन किया जिसमें सभी विद्यार्थियों ने बढ़चढ़ कर भाग लिया। यज्ञ के यजमान की भूमिका निभाते हुए श्री वी.ए.स. ठाकुर ने अपने सम्बोधन में कहा कि इस तरह के शिविरों में आने का सौभाग्य पुण्य कर्मों के फलस्वरूप किसी–किसी को ही प्राप्त होता है। उन्होंने सभी विद्यार्थियों एवं महानुभावों को बताया कि मनुष्य कि जीवन में ही जीव उस परम पिता परमात्मा को जानने तथा उसके श्री चरणों में स्थान प्राप्त करने हेतु प्रयास कर सकता हैं।

वैदिक मोहन आश्रम के प्रबन्धक, श्री धनी राम जी ने छात्रों के अनुशासन तथा जीवन के मूल्यों की भूरी–भूरी प्रशंसा की और कहा जिस तरह के अनुशासन एवं मूल्यों का प्रमाण डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल, प्रोफेसर कालोनी, यमुनानगर के विद्यार्थियों एवं शिक्षिको ने दिया वह एक अदभुत अनुभव रहा।

डी.ए.वी. विद्यालय, जीन्द में 51 कुण्डीय यज्ञ समारोह का आयोजन

डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल , जीन्द के प्रागण में आर्य युवा समाज के तत्वाधान में स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस के उपलक्ष्य में 51 कुण्डीय यज्ञ का आयोजन रखा गया था। अभिभावकों के उत्साह को देखते हुए 103 कुण्ड बनाने पड़े। समारोह में प्रसिद्ध समाज सेवी आर्य समाजी तथा दयानन्द ब्रह्मा महाविद्यालय हिसार के वरिष्ठ सदस्य श्रीमान प्रमोद लांबा जी मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित थे। कार्यक्रम की अध्यक्षता गुरुकुल कालवां से स्वामी धर्मदेव जी ने की। कार्यक्रम में विशिष्ट अतिथि के रूप में दयानन्द योगाश्रम जीन्द से स्वामी रामवेश जी, स्थानीय प्रबन्धक समिति के सदस्य व डी.ए.वी. स्कूलों के प्राचार्य सुनील शास्त्री जी ने भजनों के माध्यम से सुरम्य वातावरण बना दिया। इस अवसर पर विद्यालय में बच्चों के द्वारा प्रति माह दान स्वरूप दिए गए एक–एक रुपये की एकत्रित धनराशि से ब्राह्म महाविद्यालय हिसार के ब्रह्मचारियों को 5 किवंअल चावल तथा 6 किवंटल गेहू, एक टीन सरसों का तेल दान के रूप में दिया गया।

इस अवसर पर यज्ञ की महत्ता व स्वामी श्रद्धानन्द जी के बलिदान के बारे में प्रकाश डाला गया। कि इस अवसर पर विद्यालय के प्राचार्य श्री हरेश पाल पांचाल ने यजमान के रूप में उपस्थित सभी का यज्ञ की सफलता के हार्दिक धन्यवाद किया।

प्राचार्य जी ने मुख्य अतिथि, अध्यक्ष महोदय व विशिष्ट अतिथियों का आभार व्यक्त किया प्राचार्य ने विद्यालय की आर्य युवा समाज के विद्यार्थियों की भरपूर योगदान देने के लिए प्रशंसा की अन्त में शान्ति पाठ के साथ आयोजन का समापन किया गया।

डी.ए.वी. कांगडा के डॉ प्रदीप की पुस्तक का विमोचन हुआ

एम.सी.एम. डी.ए.वी. महाविद्यालय, कांगडा के प्राचार्य डॉ. वरिन्द्र भाअिया ने एक विज्ञप्ति में बताया कि अर्थशास्त्र विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ. प्रदीप ने मोहन लाल सुखाड़िया, विश्वविद्यालय उदयपुर (राजस्थान) में इण्डियन इक्नोमिक ऐसोसियशन द्वारा आयोजित तीन दिवसीय कॉन्फ्रैन्स में भाग लिया। इस अवसर में मुख्य अतिथि भारतीय रिजर्व बैंक के गवर्नर डॉ रघु राम राजन थे। मुख्य अतिथि ने डॉ. प्रदीप तथा डॉ. एस.डी.चमोला रिटार्यड प्रो. अर्थशास्त्र मैनेजमैन्ट, एच. ए.यू. हिसार (हरियाणा) द्वारा रचित पुस्तक *'बिजनेस ऐथिक्स तथा कारपोरेट गर्वनैस'* का विमोचन किया। इस अवसर पर आई.सी.एस.आर. के चेयरमैन डॉ. एस थोरट भी साथ थे। इसके साथ ही डॉ. वाई वी रेड्डी जो कि 14वें वित्त आयोग के चेयरमैन हैं, भी उपस्थित थे। डॉ. प्रदीप ने ''भारत में विश्व व्यापार संगठन के पश्चात निर्यात'' विषय पर अपना शोध पत्र भी प्रस्तुत किया। इस उपलब्धि पर प्राचार्य डॉ.वरिन्द्र

भाटिया ने कहा कि विशेष तौर पर हमारी संस्था तथा कांगड़ा के लिए तथा हिमाचल के लिए भी गौरव की बात है।

मोनेट डी.ए.वी. रायपुर में हुआ बृहद् वैदिक यज्ञ

अमर बलिदानी, अमर हुतात्मा , आर्य जगत के मूर्धन्य संन्यासी स्वामी श्रद्धानन्द को श्रद्धा–सुमन अर्पित करते हुए मोनेट डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल, मंदिर हसौद, रायपुर के पवित्र प्रांगण में वृहद् यज्ञ का आयोजन हुआ। प्राचार्य डॉ. बी.पी.साहू ने दीपक

प्रज्जवलित कर विधिवत् शुभारम्भ किया। तत्पश्चात् यज्ञ का शुभारम्भ हुआ जिसमें यज्ञवेदी में मुख्य यजमान के रूप में प्राचार्य महोदय उपस्थित थे। विद्यालय के समस्त शिक्षक–शिक्षिकाएं एवं छात्राएँ इस पवित्र अवसर पर उपस्थित थे। सबने बड़े ही श्रद्धा भक्ति एवं सम्पूर्ण की भावना से यज्ञ में आहूतियाँ प्रदान कीं।

अंत में शांतिपाठ एवं प्रसाद वितरण के साथ कार्यक्रम का समापन हुआ।

आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा मंदिर मार्ग के लिए **एस.के शर्मा** द्वारा प्रकाशित एवं मुद्रित **अरावली प्रिंटर्स एण्ड पब्लिशर्स (प्रा.) लि.,** डब्ल्यू–30, ओखला, फेस–II, नई दिल्ली–110020 (दूरभाष : 26388830–32) से मुद्रित एवं कार्यालय **'आर्य जगत्'** आर्यसमाज भवन मंदिर मार्ग नई दिल्ली से प्रकाशित मो.–9868894601 सम्पादक – **पूनम सूरी**